१ अश्वत्थाम्ने

२ बलये

३ व्यासाय

४ हनुमते

५ कृपाचार्याय

६ मार्कण्डेयाय

७ परशुरामाय

सप्त चिरजीविभ्यः

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

॥ श्रीः ॥

804

सन्ध्या भाष्य ।

उपेन्द्र निवेदन

जिसका

उल्था सुलभ भाषा में पण्डित उपेन्द्र
नारायण काश्मीरी ने किया

और

अनेक मन्त्रों का संग्रह जो सन्ध्या से
सम्बन्ध रखते हैं.

ALL RIGHTS RESERVED.

Printed by U. C. Banerji

AT THE ANGLO-ORIENTAL PRESS, LUCKNOW.

१९१२.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

* श्री *

सन्ध्या भाष्य ।

उपेन्द्र निवेदन

जिसका

उल्था सुलभ भाषा में पण्डित उपेन्द्रनारायण
काश्मीरी ने किया

और अनेक मन्त्रों का संग्रह जो सन्ध्या से
सम्बन्ध रखते हैं ।

सन् १९१२ ई०

Printed by U. C. Banerji at the Anglo-Oriental Press, Lucknow.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भूमिका ।

इस भाष्य में कई संकेत चिह्न मिलेंगे उनको जानना चाहिये ।

१ ( ) इसके भीतर शब्दार्थ से अधिक शब्द समास पूरा करने को हैं ।

२ ,, ,, जहां ऐसे २ दो वा अधिक चिह्न हों तो ऊपर के शब्दों के स्थान पर चिह्नों को जानना ।

३ जो शब्द कुछ स्थूल अक्षरों में होवें उनको मूल का भाग जानना ।

४ . शब्दान्त का चिह्न है ।

५ ० इत्यादि शेष शब्द जो दोहराये नहीं ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ॐ

श्रीगणेशायनमः

आरम्भ निवेदन ।

यह छोटा सा ग्रन्थ संक्षेप उल्था मुख्य भाग सन्ध्या भाष्य सुदर्शन प्रबोधिनीका है और एक और भाष्य ब्रह्म प्रकाशिका से मुख्य बातें इसमें लिख दी हैं जो टीका शब्दार्थ व्याख्या लिखे हैं सो इन दोनों भाष्यों और तैत्तिरीय आरण्यक का भी अभिप्राय देखकर लिखा है और जहां तक प्रमाण मनुस्मृति का मिला वह भी लिख दिया है । यह उल्था श्री पण्डित मंगलप्रसाद जी काशी बासी की सहायता से बना और श्री पण्डित प्रेमनाथ जी खूंखूं हमारे पुरोहित ने लिखने में बहुत सहायता की है न्यास और मुद्रा के चक्र छोड़े जो तन्त्र के अनुसार इस ग्रन्थ में लिखे हैं व्याख्या कहीं २ ऐसी भी पाई जावेगी जिसका प्रमाण वेद भाष्य में नहीं मिलता जो संन्ध्या भाष्य में है जिसका यह उल्था है यह सन्ध्या गायत्री कर्म आदि कर्म समझ के जहां तक मेरी बुद्धि पहुंची सुलभ शब्दार्थ मन्त्रों का इस हेतु से लिखा कि अर्थ जानने से फल विशेष होता है ।

इस ग्रन्थ को अनेक पण्डितों को दिखाया और शोधन में बहुत उपाय किया पर यह कहना सम्भव नहीं कि कहीं भूल न हो और इसके देखने वालों से यह याचना है कि जो भूल वा अशुद्धता पावें उसको शुद्ध कर देवें ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यह ग्रन्था में नियम किया है कि कोई शब्द संस्कृत से बिपरीत भाषा का नहीं लिखा है।

नाम ग्रन्थ का इस हेतु से उपेन्द्र-निवेदन रक्खा है कि अपनी ही बुद्धि से थोड़े २ विद्या जानने वालों को इसके पढ़ने से धर्म्म में विशेष लाभ होगा। मन्त्रों में स्वर वैदिकी इस हेतु से नहीं लिखे कि विना कान से सुने उनमें गम्य नहीं होता और स्वर गृह्य सूत्र आरण्यकों में लिखे हैं और मन्त्रों को गुप्त पढ़ना उचित है।

पण्डित उपेन्द्रनारायण.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अनुक्रमणिका ।

इस ग्रन्थ में पांच काण्ड हैं ।

प्रथम काण्ड—सन्ध्या की उपासना का विचार । इसमें शब्दार्थ फल त्याग काल स्थान आसन अवस्था वर्ण सन्ध्या का और शब्दार्थ ऋषि छन्द देवता विनियोग प्रणव और व्याहृतियों का है ।

द्वितीय काण्ड—मन्त्र और कर्म सन्ध्या के भाष्य सहित ।

तृतीय काण्ड—पुरुष सूक्त । नारायण उपनिषद् । लक्ष्मी सूक्त । भाष्य सहित ।

चतुर्थ काण्ड—सूक्ष्म सन्ध्या की उपासना ।

पंचम काण्ड—स्नानादि कर्म सूक्ष्म ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ॐ

श्रीगणेशाय नमः ।

सन्ध्या भाष्य ।

❀ प्रथम काण्ड ❀

(सन्ध्या) इस शब्द के चार अर्थ मिले हैं. (१) अच्छे प्रकार से जो त्रिकाल में ब्रह्मादिक देवताओं ने प्रणव आदि मन्त्रों के द्वारा उस सूर्य्य मण्डल में वर्त्तमान परमात्मा की चिन्ता और उपासना की इसका नाम सन्ध्या हुआ, केवल शब्द सन्ध्या का अर्थ यह है. अच्छे प्रकार से जिसके द्वारा वा जिससे ध्यान किया जाय । सो ध्यान से सर्वोत्तम ध्यान परमात्मा की शुद्ध चिन्ता का आशय समझा है. (२) जिस काल में अच्छे प्रकार से परब्रह्म का ध्यान किया जाय सो जो महात्माओं ने उत्तम काल सन्ध्या के कहे हैं वह आगे लिखेंगे. (३) रात्रि और दिन की सन्धि अर्थात् मेल. (४) वेदों का संगम अर्थात् सब वेदों की ऋचा सन्ध्या में हैं जो कि हम लोगों को वेदों के अनुसार कर्म करना उचित है सो वेद की आज्ञा लिखी जाती है **अहरहः सन्ध्या मुपासीत** दिन दिन सन्ध्या करे । याज्ञवल्क्य लिखते हैं कि सन्ध्या पाप मोक्ष करने के अर्थ है और नित्य करना चाहिये मनुजी ने केवल दो काल सन्ध्या करने की आज्ञा दी है सो इससे अधिक और कोई प्रमाण अवश्य नहीं है । **मनुः** वेद के जो अंग हैं और नित्य की अनध्याय नहीं अ० २ श्लो० १०५ सो इससे जाना गया कि सन्ध्या में अनध्याय नहीं । वेद में लिखा है कि मनुजी का कहा ठीक है परन्तु और अनेक ऋषि मध्यान्ह की सन्ध्या भी लिखते हैं सो यह बात कुछ मनुस्मृति से विपरीत नहीं है सो मध्यान्ह में भी जो

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सन्ध्या की जाय तो कुछ अयोग्य नहीं और जो मध्यान्ह में न की जाय तो दोष नहीं, अपने २ सावकाश के आधीन मध्यान्ह सन्ध्या रखना चाहिये सन्ध्या हीन ब्राह्मण और किसी कर्म का अधिकारी नहीं ।

मनुः–प्रातःकाल की सन्ध्या से रात्रि का पाप और सायंकाल की सन्ध्या से दिन का पाप छूटता है अ० २ श्लो० १०२ । **योग याज्ञवल्क्यः**–जब ब्रह्मा विष्णु महेश सन्ध्या करते हैं तो फिर कौन न करे रात्रि और दिन के पाप सन्ध्या करने से छूटते हैं और दूसरे जन्म में भी ब्राह्मणत्व से हीन नहीं होता श्री ब्रह्माजी ने पवित्र करने के लिये सन्ध्या बनाई ।

गोभिलः जो ब्राह्मण न सन्ध्या करता है और न जानता है वह शूद्र होजाता है–और मरके कुत्ते का जन्म पाता है । मनुजी भी लिखते हैं कि सन्ध्या न करने से ब्राह्मण शूद्र होजाता है, **योगीश्वर** कहते हैं कि सात दिन जो सन्ध्या न करे तो शूद्र हो जावे । **कूर्मपुराण**–जो ब्राह्मण सन्ध्या छोड़ के और धर्म कर्म करता है वह १०,००० वर्ष नरक में रहता है । **याज्ञवल्कः**–सूतक में भी सन्ध्या करना चाहिये परन्तु पितृकर्म नहीं । **स्मृतिः**–सूतक में मानसी सन्ध्या करना । **योगीश्वरः**-सूतक और मृतक में केवल मन में मंत्र पढ़ें प्राणायाम न पढ़ें परन्तु प्राणायाम की क्रिया करें ।

गायत्री अच्छे प्रकार से पढ़ के अर्घ्य दे उपस्थान न करे । गायत्री का जप (१०) दशांश करे । दोनों काल की सन्ध्या में अर्घ्य देना अवश्य है, जल भी जो न मिले वा कहीं बंधुवा हो तो मानसी अर्घ्य देवे, वा ऐसे महा मार्ग में हो जहां जल सुलभ न हो और जल के विचार में रस्ते में ठहरने से भय हो वा पवित्र होना दुर्लभ हो तो मानसी अर्घ्य देवे सूतक में भी जल से अर्घ्य देवे बहुत पीड़ा में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सन्ध्या न करने का दोष नहीं श्राद्ध में जो ब्राह्मण भोजन करता है उसको १० वार गायत्री पढ़ के आचमन करके सन्ध्या करना चाहिये।

त्याग सन्ध्या का।

जो देह में घाव हो वा जन्म मृतक का सूतक हो वा स्त्री रजस्वला हो वा मतवाला वा सिड़ी हो तो जब तक इन दोषों से न छूटे सन्ध्यादिक कर्म न करे, परन्तु पुलस्त्य ऋषि यह कहते हैं कि जब तक जीवे यह कर्म न छोड़े इस्से यह समझा जाता है कि मानसी करे। सिड़ी वा मतवाले को योग्य नहीं कि सन्ध्या करे।

नाभि के ऊपर वा नीचे जो बहता घाव हो तो पितृकर्म विशेष करके न करे, जो करेगा तो पितृ के मारने का दोष होगा ऐसाही दोष आगे लिखी हुई तिथों में सायंकाल की सन्ध्या करने का है। द्वादशी, पूर्णमासी, अमावस्या, संक्रान्ति और श्राद्ध के दिनों में सायंकाल की सन्ध्या न करे विशेष तो श्राद्ध के दिन सायं सन्ध्या न करे (मनुः अ० ३ श्लोक० १८८ अ० ४ श्लो० १११)

काल सन्ध्या का।

प्रातःकाल की सन्ध्या जिस समय तारे भी रहैं करना। सायंकाल की जब सूर्य्य अस्त न हुये हों आधा देख पड़ते हों। प्रातःकाल की सन्ध्या का काल तीन प्रकार से है. १ उत्तम जब सूर्य्योदय से पहले तारे रहैं. २ मध्यम जब तारे अस्त हो जावें. ३ अधम जब सूर्य्य उदय हो जावें।

सायंकाल सन्ध्या के भी तीन प्रकार हैं. १ उत्तम जब तक सूर्य्य अस्त न हों. २ मध्यम जब थोड़े तारे निकलें. ३ अधम जब तारे सब निकल आवें, ब्राह्मण के लिये सूर्य्य उदय से पहिले दो महूर्त। क्षत्रिय के लिये उसका आधा और वैश्य के लिये क्षत्रिय के काल से

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आधा काल लिखा है। मनु जी प्रातःकाल की सन्ध्या का समय सूर्य्य उदय से दो घड़ी पहिले और सायंकाल का समय तीन घड़ी दिन रहे लिखते हैं। मध्यान्ह काल सन्ध्या का जब १६ अंश दिन में से ७ अंश शेष रहैं।

संध्या का स्थान।

घर में सन्ध्या का फल साधारण; कुण्ड में वा जहां जल बहता हो १० गुना होता है तालाब पर १०० गुना, गंगाजल में अनन्त फल है और विष्णु के निकट अनन्त फल है, आशय यह भी है कि विष्णु की मूर्ति के सन्मुख करने में बहुत फल है, घर से बाहर सन्ध्या करना विशेष करके ब्रह्मचारी के लिये है गृहस्थ चाहे घर में करे चाहे बाहर जैसा सावकाश हो।

दीर्घ सन्ध्या—अर्थात बड़ी सन्ध्या से आशय यह है कि गायत्री का जप अधिक हो प्रातःकाल में सूर्य्योदय से पहले और सायंकाल में अस्त होने से पहिले। यही नाम दीर्घ सन्ध्या का है जप विधि और संख्या आगे प्रकरण में मिलेगी।

आसन।

कुशा का आसन उत्तम है, कुश का अग्र भाग जो है वह पूरब रहे इस प्रकार से आसन बनाया जावे कि जड़ नीचे और नोक आगे रहें। मनुः श्लो० ७५ अ० २। सन्ध्या करने के फल बहुत से अच्छे ऋषियों ने कहे हैं उत्तम फल तो ज्ञान मोक्ष का द्वारा है।

सन्ध्या के नाम तीन कई ग्रंथों में लिखे हैं।

१ प्रातःकाल की सन्ध्या का नाम........गायत्री
२ मध्यान्ह ....सावित्री
३ सायं.......................................सरस्वती

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इन के ध्यान भी पृथक २ लिखे हैं परन्तु कोई ऋचा वेद की इन ध्यानों के संबंध में नहीं, इस हेतु से वह ध्यान लिखना अवश्य नहीं समझा ।

सन्ध्या छूटने का प्रायश्चित्त ।

जब यज्ञोपवीत हो जावे उसी दिन से नित्य सन्ध्या करना उचित है सायंकाल की सन्ध्या से आरंभ लिखा है जो किसी कारणसे सन्ध्या छूट गई हो तो सुलभ उपाय उसका यह है कि ८००० गायत्री का जप शुभ दिन में शुद्ध चित्त से करे और व्याहृति हवन करे जैसी विधि हवन की होती है सूक्ष्म हवन करके सायंकाल से प्रारंभ करे और मन में दृढ़ रहे कि फिर कदापि सन्ध्या का त्याग न होगा । जो हवन कुछ दुर्लभ हो तो केवल ८००० जप गायत्री का मुख्य प्रायश्चित्त है यह बात प्रायश्चित्तेन्दु शेखर में लिखी है ।

नित्य में जो कदापि अतिकाल हो जावे तो १०० बार जप गायत्री उसका प्रायश्चित्त है (धर्म्मसिन्धु ३ परिच्छेद पूर्वार्द्ध)

शिक्षा ।

देवोभूत्वार्चयेत् देवं ना देवो देवमर्चयेत् । टीका— देवता बनके देवता की पूजा करे अदेव होकर न पूजा करे । व्याख्या अर्थात् देवतों का वर्ण और स्वभाव अपना बनावे भस्म इत्यादि पहले धारण करके उपासना करे, जिस देवता की उपासना करे उसी का वर्ण बने ।

ऋचा के आदि में ऋषि छन्द देवता और विनियोग सब जगह मिलेंगे सो इनका प्रयोजन यहां पर लिखा जाता है ।

ऋषि—मंत्र को जिस ऋषि ने पाया, देखा वा जिसको जिस मंत्र से प्रथम कोई सिद्धि प्राप्त हुई वह ऋषि समझा गया, जैसे विश्वामित्र को गायत्री सिद्ध हुई, सो मंत्र के प्रारम्भ में विश्वामित्र का नाम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लिखा है, आशय यह समझा जाता है कि उस ऋषि के नाम का स्मरण रहे और उसी प्रकार स हम को सिद्धि होवे।

छन्द–शब्दार्थ तो इसका ढकना है और यह तो प्रकट है कि जैसे किसी श्लोक में छन्द होता है वैसे ऋचा में, आशय यह है कि शुद्ध छन्द ऋचा का जाना जाय अक्षरों को इकट्ठा करने से छन्द बनता है ७ प्रकार के छंद ये आगे लिखे हैं–

१	गायत्री छंद	६ अक्षर का पाद (चौथाई)	(२४)
२	उष्णिक……	७ ……………………	(२८)
३	अनुष्टुप् …	८ ……………………	(३२)
४	बृहती ……	९ ……………………	(३६)
५	पंक्ति ……	१० ……………………	(४०)
६	त्रिष्टुप ……	११ ……………………	(४४)
७	जगती ……	१२ ……………………	(४८)

देवता–स्वामीमंत्र का आशय यह है कि उस देवता का स्मरण किया जाय जैसे गायत्री का सविता देवता है, इन बातों के जाने बिना सन्ध्या करने से थोड़ा फल होता है।

विनियोग–काम में लगाना धारण करना यह शब्दार्थ है यह मानो एक प्रकार का संकल्प है। कर्म के हेतु जो पहले कल्प में मंत्र प्रकट हुये तो किसी विशेष कार्य के लिये उनकी धारणा होती है सो जानना चाहिये कि किस कार्य के लिये मंत्र पढ़ते हैं जैसे **जपे विनियोगः** प्रयोजन यह है कि जपके निमित्त मंत्र को धारण करते वा पढ़ते हैं।

ओं

यह (ओं) परमात्मा का सबसे उत्तम नाम है इस की संज्ञा प्रणव है अर्थात् अच्छे प्रकार से जिस नाम से स्तुति की जावे यह प्रणव

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शब्द का अर्थ है। प्रणवादि मंत्र धर्म अर्थ काम मोक्ष के देने वाले हैं प्रणव से सब मंत्र उत्पन्न हुये और उसी में लीन होते हैं, आदि और अन्त में ओं पढ़ना चाहिये नहीं तो मंत्र पढ़ना निष्फल होता है, अकार उकार मकार मिलकर ओं बना। यह प्रणव अविनाशी है (अ० २ श्लोक ८४ मनुः) अ विष्णु उ शिव म ब्रह्मा इस प्रकार तीन अक्षरों का अर्थ है, और बहुत से अर्थ हैं श्री ब्रह्माजी ने तीन वेदों से तीन अक्षर निकाले। श्लोक ७६ अ० २ मनु०। और भू भुवः स्वः व्याहृतियां भी निकालीं प्रणव का जप बहुत उत्तम है इस नाम से ईश्वर बहुत प्रसन्न होता है सत्पुरुषों को इस का अधिकार है इसका उच्चारण बहुत शुद्ध अवस्था में एकांत में उचित है बहुधा लोग इस को साधारण और स्वाभाविक अशुद्ध अवस्था और स्थान में लिखते पढ़ते हैं यह अनुचित है और इसमें दोष है। मनुः श्लोक ७५ अ० २

ओं प्रणवस्य ऋषिर्ब्रह्मा गायत्रं छन्द एवच।
देवोग्निर्व्याहृतीषु च विनियोगः प्रकीर्तितः॥

टी०—प्रवणके ऋषि ब्रह्मा और छंद इसका गायत्री [२४] है, अग्निदेवता है, सब कर्म के आरम्भ में यह विनियोग है। इसी प्रकार से व्याहृति के ऋषि छंद और देवता हैं। ओं का गायत्री छंद इस प्रकार से है कि अकार से १४ स्वरों का और उकार मकार से पांच पांच अक्षरों का ग्रहण होता है। सब २४ हुये। ब्रह्माजी ने प्रणव को वेद में पाया इस हेतु से वह ऋषि हुये अग्नि नाम ईश्वर का है वह देवता इसका है। इन तीन अक्षरों का अर्थ पृथक २ यह है— अ विराट अर्थात् विविध प्रकार के चराचर जगत को जो प्रकाशित करता है वा रचता है वह परमात्मा है, दूसरा अर्थ अग्नि जो पूजा के योग्य है वा जिसको वेदों में माना जाता है वह अग्नि ईश्वर का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नाम है । तीसरा अर्थ विश्व संसार । उ इसके भी कई अर्थ हैं एक हिरण्य गर्भ अर्थात् सूर्य्यादि तेज जिसके गर्भ में है और सब को प्रकाशित करता है सो ऐसे ईश्वर का नाम हिरण्यगर्भ है । दूसरा अर्थ वायु अर्थात अनंत बल के कारण सारे जगत को धारण करता है । तीसरे तैजस अर्थात सूर्यादिकों को वह ईश्वर अपने प्रकाश से प्रकाश देता है । गीता में लिखा है ओं पढ़ते हुए जो प्राण छोड़ता है वह मोक्ष हो जाता है

म यह भी ईश्वर सर्व शक्तिमान और आदित्य अर्थात अविनाशी स्वरूप को कहते हैं और प्रज्ञ अर्थात जिसको सारे जगत का ज्ञान है सो यह भी ईश्वर का नाम है अनेक शक्ति स्वरूप से परमात्मा के अनेक नाम हैं वेदों में यह ओं उत्तम नाम है । 'ओं तत तत' ये ३ ईश्वर के नाम उपासना के अंत में पढ़ना शुभ है ।

व्याहृति ।

इस शब्द का अर्थ कहा है । श्री सत्य संकल्प ब्रह्माजी ने एक समय ऐसा कहा कि ७ लोक भूः आदि होंगे सो सात लोक हुये इन सातों का व्यौरा आगे लिखेंगे इसी मे व्याहृति शब्द का अर्थ कहा ठहरा ।

१ भूः—जिसमें सब जीव और पदार्थ होते हैं अवीची नाम नरक से ऊपर सुमेरु पर्वत की पीठ वा चोटी तक प्रमाण इस लोक का है इसका अर्थ पृथिवी भी है ।

२ भुवः—जहां पुनर्जन्म लेके प्राणी भोग करें सुमेरु की चोटी से लेके ध्रुव तक यह लोक है ।

३ स्वः—शीत उष्ण वृष्टि तेज जिसमें उत्पन्न होते हैं और अच्छी करनीवालों का वह घर है ध्रुव से ऊपर पांच प्रकार का स्वर्गलोक है ।

४ महः—यह सब लोकों के बीच में सब से बड़ा है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

५ जनः—जब कल्प दाह होता है और सब प्राणी पदार्थ भस्म हो जाते हैं तो सृष्टि के आदि इस लोक में उत्पन्न होते हैं । यह पांचों लोक स्वर्ग भी कहे जाते ।

६ तपः—सनकादिक ब्रह्माजी के पुत्र जो तप करने से सिद्ध हैं वह प्रलय के समय इस लोक में ठहरते हैं ।

१ सनक. २ सनंदन. ३ सनातन. ४ सनत्कुमार. यह चार पुत्र ब्रह्मा जीके हैं ।

७ सत्यं—यह घर ब्रह्मा का है सब के ऊपर सदा यह लोक बना रहता है ज्ञान और सुकर्म करने और सच बोलने से यह लोक भोग करने को मिलता है फिर यहां से और जगह जाना नहीं पड़ता है, इससे ऊपर और लोक नहीं इसका नाम ब्रह्मलोक भी है । और दूसरा अर्थ इन व्याहृतियोंका आगे लिखा जाता है । गायत्री के साथ जो पहली तीन व्याहृतियां पढ़ी जाती हैं उनमें यह तीनों विशेषण भर्ग शब्द के समझे जाते हैं ।

तीन महा व्याहृतियों का दूसरा संक्षेप अर्थ ।

भू रिति वै प्राणः, भुव रित्यपानः, स्व रिति व्यानः, यह तैत्तिरीय उपनिषद का वचन है ।

भूः—प्राण अर्थात सब प्राणियोंको प्राण देनेवाला जिलानेवाला । वा प्राण से अधिक प्रिय ईश्वर है ।

भुवः—अपान अर्थात मोक्ष चाहनेवालोंका सब दुःख हरनेवाला और अपने सेवकोंका और धर्म्मात्मा पुरुषोंका दुःख दूर करनेवाला ।

स्वः—व्यान अर्थात वह ब्रह्म प्राणादि सारे जगत का चेष्टा करनेवाला ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आगे के चक्र से ऋषि इत्यादिक इन व्याहृतियों के जाने जावेंगे।

नाम व्याहृति का	ओं भूः	ओं भुवः	ओं स्वः	ओं महः	ओं जनः	ओं तपः	ओं सत्यं
नाम ऋषि का	विश्वामित्रः	यमदग्निः	भरद्वाजः	गौतमः	अत्रिः	वसिष्ठः	कश्यप
नाम देवता का	अग्नि	वायु	रवि	बृहस्पति	वरुण	इन्द्र	आदित्य

इन सब का छन्द अत्युक्ताख्य है। जो एक २ अक्षर प्रणव बिन व्याहृति है उससे एक २ का उक्ताख्य छन्द भी समझना, दूसरा चक्र नीचे लिखा है।

व्याहृति	भूः	भुवः	स्वः	महः	जनः	तपः	सत्यं
देवता	अग्नि	वायु	सूर्य	बृहस्पति	आप	इन्द्र	विश्वेदेव
छन्द	गायत्री	उष्णिक्	अनुष्टुप्	बृहति	पंक्तिः	त्रिष्टुप	जगती

विनियोग इनका प्राणायाम जनेऊ इत्यादि में होता है अर्थात इन कामों में धारणा इन व्याहृतियों की होती है।

अनेक कल्पों में और २ ऋषि हो जाते हैं जिस कल्प में जो ऋषि मंत्र पाता है वही ऋषि उस मंत्र का होता है।

गायत्री वर्णन।

ओं विश्वामित्रऋषिः छन्दो गायत्रं सवितातथा देवता पनये जप्ये गायत्र्या योग उच्यते ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

टी०—गायत्री के विश्वामित्र अर्थात् विश्व संसार के मित्र श्री ब्रह्माजी ऋषि हैं और गायत्री २४ अक्षर का छन्द है देवता इसका सविता है यज्ञोपवीत और जप में इसकी धारणा होती है।

संध्या में संकल्प के पीछे आवाहन इस प्रकार से होता है।

ओं आवाहयामि गायत्रीं सर्व पाप प्रणाशिनीं।
न गायत्र्या परंजप्यं न व्याहृति समंहुतं॥

टी०—मैं गायत्री जी का आवाहन करता हूँ वो सब पापों की नाश करनेवाली है।

गायत्री से बड़ा कोई मंत्र नहीं व्याहृति के समान कोई होम नहीं है।

शिक्षा—ये तीन पाद की गायत्री वेद का मुख है जो कोई तीन वर्ष तक निरालस पढ़ता है वह वायु और आकाश रूप होके परंब्रह्म को प्राप्त होता है। आगे दूसरा आवाहन है।

ओं आगच्छवरदे देविजप्यंमे सन्निधौ भव।
गायंतन्त्रायसे यस्माद्गायत्रीत्वं ततःस्मृता॥

टी०—हे गायत्री तू आ तू वर देनेवाली है हमारे जप के मन्त्र में निकट हो, जो कोई तुझे गाता है अर्थात् जपता है उसकी पालना करती है इस हेतु से तेरा नाम गायत्री हुआ। सविता इसका देवता है इस हेतु से सावित्री भी इसका नाम है। आगे गायत्री के आवाहन की ऋचा और मन्त्र लिखेंगे।

सन्ध्यामें इन बातों को पहले विचार कर लेना, १ यज्ञोपवीत पहने हो, २ शिखा बंधी हो, ३ भस्म त्रिपुण्ड लगाये हो, ४ अंगोछा लिये हो, धोती पहने हो, ५ सूत का सिया वस्त्र न पहने हो।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

❀ द्वितीय काण्ड ❀

प्रारम्भ संध्या का ।

जब स्नान करके आसन पर आवे तो ओं पढ़के तीन आचमन करे और तीन बार गायत्री पढ़के शिखा बांधे और देह के चारों ओर जल छिड़के । और तर्जनी और अंगुष्ठ जलमें डुबा के जल नथुनों में लगावे और अंगुष्ठ और अनामिका से जल आंखों में लगावे । कनिष्ठिका और अंगुष्ठ से दोनों कानों में जल लगावे । नाभि और हृदयमें हथेली से जल लगावे और सब उंगलियों से शिर और कांधे में जल लगावे । यह उपस्पर्श विधि है । तब प्राणायाम करे । मनुः श्लोक ६० अ० २ ।

आचमन ।

पूरब वा उत्तर मुख फेन रहित सीतल जल से पवित्रता की इच्छा करते हुये तीन बार आचमन करे । मनुः श्लो० ६१ अ० २ ।

आचमन में जल का प्रमाण ये है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य को क्रमसे हृदय, कण्ठ, मुख मध्य तक जल प्रवेश करना उचित है, मनुः श्लो० ६२ अ० २ ।

प्राणायाम ।

ओंभूः ओम्भुवः ओंस्वः ओंमहः ओंजनः ओंतपः ओंसत्यम ओंतत्सवितुर्वरेण्य म्भर्गो देवस्य धीमहिधियो योनः प्रचोदयात् । ओंआपो ज्योतिरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ।

टी०—पृथक गायत्री के शिर की अन्तश्चरसि के आचमनमें मिलेगी ।

प्राणायाम की क्रिया इस प्रकार से है मंत्र पढ़ते में पूरक कुम्भक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रेचक करना चाहिये—प्रथम एक बार मंत्र पढ़ने में श्वास ऊपर खींचे तब दो बार मंत्र पढ़ते में श्वास रोके। तब तीन बार मंत्र पढ़ते में श्वास नीचे छोड़े और क्रम से रक्त नील श्वेत वर्ण ब्रह्मा विष्णु शिव का ध्यान नाभि हृदय और ललाट में करे। अर्थात् पूरक में लाल वर्ण ब्रह्मा का ध्यान नाभि में करे। कुंभक में नील वर्ण विष्णु का ध्यान हृदय में करे। रेचक में श्वेत वर्ण शिव का ध्यान ललाट में करे।

ओं आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

व्याख्या०—यह ऋचा सब भर्ग का विशेषण है यह सोलह अक्षर ब्रह्म गायत्री का शिर है। एक बार जो विप्र पढ़ता है वह संसार के बन्धन से छूटता है, विश्वास और चित्त की एकाग्रता अवश्य है इस यजुर्वेदी ऋचाके प्रजापति ऋषि हैं पर छन्द कोई नहीं। भूः आदि सात लोक में व्यापक हैं और दीपक के समान सब लोकों में प्रकाश किये हैं। इस ऋचा में आप शब्द से पांचों तत्व १ पृथवी २ अप ३ तेज ४ वायु ५ आकाश का ग्रहण होताहै। प्राणायाम थोड़ा २ करके श्वास को अपने बस करे। सात व्याहृति से भी एक प्रकार का सूक्ष्म प्राणायाम है। जो पृथक २ ब्रह्मा विष्णु शिव का ध्यान लिखा है सो इन तीनों को एकही सब लोकों का कारण समझना जैसा गायत्री का है वह ध्यान मुख्य है।

संकल्प।

पहले देश काल संस्कृत तब 'अमुक गोत्रोहं अमुक शर्म्माहं श्री परमेश्वर प्रीति द्वारा उपात्त दुरितोप शान्ति पूर्वक ब्रह्म वाद्यै प्रातर्मध्याह्न सायं सध्योपासनं करिष्ये'। पढ़ जल हाथ में लेके छोड़ देवे।

टी०—मैं ईश्वर के प्रीतिद्वारा पाप दुःख दूर करने और ईश्वर के प्राप्त होने के हेतु सन्ध्या करता हूं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

संकल्प के उपरान्त प्राणायाम करे तब ओजोसि ऋचा से जो आगे लिखेंगे श्री गायत्री का आवाहन करे ।

गायत्री का ध्यान ।

ॐ ओजोऽसि सहोऽसि बलमसि भ्राजोऽसि देवा नाम धाम नामासि । विश्वमसिविश्वायुः सर्व मसि सर्वायुरभिभुः ॐ गायत्री मावाहयामि ॥

टी०—ओजः-१० इन्द्रियों की शक्ति रूप वा पराक्रम स्वरूप **असि** आप हो **सहः**—मन की शक्ति रूप वा सामर्थ **असि** आप हो **बलं** देह की शक्ति रूप वा सर्वोत्तम बल रूप **असि** आप हो **भ्राजः** स्वप्रकाश रूप **असि** आप हो **देवानां** देवो । वा आत्मावान जनों वा सब प्राणियों की अर्थात देवता मनुष्य पशुपक्षी इत्यादि का **धाम नाम** घर वा भोग और लीन का धाम **असि** आप हो **विश्वं** तत्व रूप से और तत्वों से जो प्राणी पदार्थ हुये हैं वह रूप **असि** आप हो अर्थात आप विश्व रूप हो **विश्वायुः** संसार के रहनेवालों को बड़ी आयु देनेवाली आपही हो **सर्व** सब वस्तु वा सब छन्दों में मुख्य छन्द २४ अक्षर का उत्तम छन्द **असि** आप हो **सर्वायुः** सब वस्तु अच्छे प्रकार से देनवाली आपही हो **अभिभूः** चारों ओर हो अर्थात मन्त्र रूप हो वा अनेक ब्रह्माण्ड चौदह २ लोक सहित में व्यापक हो वा सब पापोंके तिरस्कार हेतु हो **ॐ** आप प्रणव प्रतिपाद्य परमात्मा हो **गायत्रीम्** सो गायत्री को **आवाहयामि** (मन में) बुलाता हूं वा रखता हूं ।

इस ऋचा में परमेश्वर के अनेक प्रकार की शक्ति का वर्णन है और उपमा से गायत्री देवी स्वरूप ईश्वर की शक्ति स्त्री लिङ्ग में स्मरण की जाती है और लिखा है कि सूर्य मण्डल वा ब्रह्मलोक में विराजती

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

है जपमाला लिये पालथी के प्रकार का आसन बनाये । ओजोसि ऋचा से यजुर्वेदी पुरुष उसका आवाहन करे। पूर्व कल्प में जिन पुरुषों को दर्शन की इच्छा थी उन्हों ने इसी ऋचा से गायत्री के दर्शन पाये, इस ध्यान से पीछे प्राणायाम करे प्राणायाम का आगे आसन लिखते हैं ।

प्राणायाम का आसन ।

दहना पैर बाईं जांघ के ऊपर जमावै और बायां चरण दहनी जांघ पर जमावे और पीठ के पीछे से दोनों हाथ निकाल के दोनों अंगूठे पैर के अच्छे प्रकारसे पकड़े और दाढ़ी हृदय से लगावे और नासिका के आगे की नोक को देखे यह पद्मासन का प्रकार है, ऐसा आसन विघ्न और विकार को हरता है आसन विधिसे ठीक करके प्राणायाम करे सुचित्त और एकाग्र होके। मनुष्य का चित्त स्थिर नहीं रहता जिस प्रकार से जल बिन्दु पवन के चलने से छिन भर भी नहीं ठहरता है सो चित्त का विश्वास न करना, चित्त के स्थिर करने को श्वास रोकना चाहिये और श्वास रोकने के लिये अष्टांग योग का अभ्यास करना चाहिये श्वास चलने से सब इन्द्रियां चलती हैं श्वासको रोक के वृक्ष के समान होजावे जब तक श्वास देह में बँधी रहे और चित्त एकाग्र रहे अर्थात् स्थिर रहे और जब तक भौं के बीच में दृष्टि लगी रहे तब तक काल का भय कहां होसक्ता है । थोड़ी २ युक्ति से श्वास चढ़ावे रोके और छोड़े तो योग सिद्ध होता है । पहले मन्त्र पढ़ते हुये श्वास चढ़ावे अर्थात् खींचे और नाभि में लाल वर्ण ब्रह्मा का ध्यान करे । फिर दो बार मन्त्र पढ़ते हुये श्वास रोके और हृदय में नील वर्ण विष्णु की चिन्ता करै । तब तीन बार मन्त्र पढ़ते हुये श्वास थोड़ी २ छोड़े और श्वेत वर्ण शिव का ध्यान ललाट में करै यह युक्ति प्राणायाम की है और जो ब्रह्मा विष्णु शिव का ध्यान है सो यह रीति लिखी । तीन भिन्न देवता न

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

समझना एक ब्रह्म सर्व लोक का कारण समझे जैसा ध्यान गायत्री की टीका में लिखेंगे वह उत्तम ध्यान है ।

सायंकाल का अचामन ।

अग्निश्च मेति रुद्र ऋषिः गायत्र्युपरिष्ठाद्बृहती । छन्दः अग्निर्देवता सायमाचमने विनियोगः ॥

टीका—इस आचमन के ऋषि रुद्र हैं और पहले दो भाग गायत्री छन्द और पिछले टुकड़े का बृहती छन्द है सायंकाल के आचमन में पढ़ा जाता है ।

ओं अग्निश्च मा मन्युश्च मन्यु पतयश्च मन्युऽकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यदह्ना पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना अहस्तदवलुम्पतु यत्किञ्च दुरितं मयिइदमहं माममृतयोनौ सत्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा ।

अग्निः अग्नि **च** और **मा** मुझे **मन्युः** यज्ञ **च** और **मन्युपतयः** यज्ञ के स्वामी इन्द्रादिक **च** और **मन्युकृतेभ्यः** असांग यज्ञ अर्थात् जो विधिपूर्वक यज्ञ न हुआ हो उसके वा क्रोधकृत **पापेभ्यः** पापों से **रक्षन्ताम्** रक्षा करें **यत्** जो **अह्ना** दिन में **पापम्** पाप **अकार्षम्** किया **मनसा** मन से **वाचा** बोलने से **हस्ताभ्यां** हाथों से **पद्भ्याम** पैरों से **उदरेण** पेट से **शिश्ना** लिंग से **अहः** दिन का स्वामी स्वप्रकाश रूप **तत्** वह **अवलुम्पतु** नाश करे **यत्** जो **किंच** कुछ **दुरितम्** पाप **मयि** मुझ में हो **इदम** यह (सब पाप) **अहम** मैं **माम्**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मेरे लिंग शरीर की अमृतयोनौ अमर योनि में सत्ये सच्ची वाध रहित ज्योतिषि ईश्वर के स्वप्रकाश की ज्योति में वा हृदय की अग्नि में जुहोमि होमता हूं अर्थात् इस होम से सब पाप भस्म करता हूं स्वाहा सो आहुति पूरी होके पहुंचे अर्थात् पूरी ठीक होवे। स्वाहा का अर्थ अग्नि में आहुति छोड़ना।

टीका—जो पाप मुझ से असांग यज्ञ करने का हो अर्थात् विधि न बनने से वा क्रोध करने से हुआ उस से मेरी अग्नि और यज्ञ और यज्ञ के पति इन्द्रादिक रक्षा करें। दिन में जो पाप किया मन से बोलने से हाथों से पैरों से पेट से अर्थात् पेट भरने के हेतु जो पाप किया और अपनी स्त्री के साथ वर्जित काल में प्रसंग करने से जो पाप हुआ उन पापों को दिन का अधिष्ठता देवता स्वप्रकाश ईश्वर नाश करे जो कुछ मुझ में पाप हो उसको अपनी हृदय की पाचक रूप अग्नि में जो सच्चे संकल्प की ज्योति ईश्वर स्वरूप है होमता हूँ सो पाप भस्म होजावें। इसमें स्वाभाविक पाप दूर होने की प्रार्थना है और निश्चय पाप नाश होते हैं और यह भी आशय है कि हम कदाचित ऐसे पाप न करें। जो अधिक पाप हैं उनका प्रायश्चित भिन्न है। "किंच" का दूसरा पाठ "किंचिद्" है।

प्रातःकाल का आचमन।

सूर्यश्चमेति नारायण ऋषिः गायत्र्यु परिष्टाद्बृहती छन्दः सूर्योदेवता प्रातराचमने विनियोगः ॥

टीका—इसके ऋषि नारायण पहले दो भाग का गायत्री छन्द और पिछले टुकड़े का वृहती छन्द है, सूर्य देवता है ८४ अक्षर हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओं सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्यु कृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्तां यद्रात्र्या पापमकार्षं मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुम्पतु यत्किञ्चिदुरितं मयि इदमहम्मामममृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा । ओं

इसमें तीन शब्द नये हैं उनका उल्था यहां लिखते हैं और सब अर्थ ऊपर होगया ।

याद्रात्र्या जो रात में रात्रिः रात्रि का अधिष्ठाता देवता अर्थात सब का दाता ईश्वर सूर्ये सूर्य की ज्योतिषि ज्योति में अर्थात हृदय की अग्नि में ।

मध्यान्ह का आचमन ।

ओं आपः पुनान्त्वाति विष्णु ऋषिः उष्णिक छन्दः आपो देवता आचमने विनियोगः ।

टीका—विष्णु इस के ऋषि उष्णिक् छन्द आप देवता है मध्याह्न में यह ऋचा पढ़ के आचमन होता है ।

ओं आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम् पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म पूता पुनातु माम् यदुच्छिष्टम भोज्यं वा यद्वा दुश्चरितं मम सर्वं पुनन्तु मामापोऽसताञ्च प्रतिग्रह ॐ स्वाहा ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आपः जल **पुनन्तु** शुद्ध करें **पृथिवीं** पृथिवी को **पृथिवी** पृथिवी **पूता** पवित्र होके **पुनातु** पवित्र करे **माम** मुझ को **पुनन्तु** (जल) पवित्र करे **ब्रह्मणस्पतिः** वेद जाननेवाले को वा परमात्मा को भी अर्थात आत्मा में मिले हुये परमात्मा को जो अज्ञान अवस्था में प्राप्त है **ब्रह्मपूता** शुद्ध वेद **पुनातु** शुद्ध करे **मां** मुझे **यत्** जो **उच्छिष्टं** जूठा **अभाज्यम्** जो भोजन के योग नहीं वह खाया **वा** वा **यद्वा** वा जो **दुश्चरितं** असत्य आचरण हो किसी की बुराई **मम** मुझ में हो **सर्वं** सब से **पुनन्तु** शुद्ध करे **माम** मुझ **आपः** जल **असताम** जो बुरे जन हैं उन से वा शूद्रादिकों से **च** (और) **प्रतिग्रहम्** कुछ ग्रहण किया वो सब शुद्ध होवे। मंत्र पढ़े हुये जल की आहुति देता हूं (यह आशय निकलता है) **स्वाहा** सुहुत हो।

टी०—जल पृथिवी को पवित्र करे और पृथिवी पवित्र होके मुझे पवित्र करें और ब्रह्मणस्पति अर्थात अज्ञान में पड़े हुये परमात्मा को भी शुद्ध करे जो उच्छिष्ट वा निन्दित खाना खाया हो और जो किसी की बुराई करने का दोष मुझ में हो सब से जल मुझे पवित्र करे और असत पुरुषों से वा शूद्रादिकों से कुछ ग्रहण किया उसके दोष से शुद्ध करे यह पढ़के मैं जल की आहुति देता हूं स्वाहा—सुहुत होवे।

व्याख्या—आप शब्द का अर्थ व्याप्त है और यह नारायण का स्वरूप बहुत उत्तम वस्तु है और शुद्ध करता है। इस ऋचा में पुनन्तु ब्रह्मणस्पति के दो अर्थ हैं। पहला यह है मुझ वेद जाननेवाले को पवित्र करे दूसरा यह है अज्ञान में पड़े हुये परमात्मा को शुद्ध करे अर्थात जीव भी परमात्मा का अंश है शरीर के सम्बन्ध से अज्ञान में पड़ा है सो उसको निराकार ब्रह्म शुद्ध करे और पृथिवी शब्द का अर्थ देह भी समझा गया है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मार्जन पहला ।

गायत्रं छन्दः अब्दैवतं सूक्तंत्वाष्ट्रस्त्रिशिराअप-श्यत् अंबरीषो वासिंधुद्वीपः मार्जनादौविनियोगः

गायत्री छन्द है जल देवता है त्वाष्ट के पुत्र तीन शिरवाले त्रिशिरा ने इस मन्त्र को देखा अम्बरीष सिन्धु द्वीप ऋषि है मार्जन में इस ऋचा का सम्बन्ध है ।

१ ओं आपोहिष्ठामयोभुवः (हृदये)
२ ओं तानऊर्जेदधातन (पादयोः)
३ ओं महेरणायचक्षसे (शिरसि)
४ ओं योवः शिवतमोरसः (हृदये)
५ ओं तस्यभाजयतेहनः (पादयोः)
६ ओं उशतीरिवमातरः (शिरसि)
७ ओं तस्माअरंगमामवो (हृदये)
८ ओं यस्यक्षयायजिन्वथ (हृदये)
९ ओं आपोजनयथाचनः (पादयोः)

१ आपः हे जल तुम हि ही निश्चय करके ष्ठा (वर्तमान) हो मयोभुवः सुख देनेवाले (हो) ।

२ ता वोह नः हमको ऊर्जे अन्न के लिये दधातन रक्खे (अर्थात हमें अन्नादिक देवो जिसमें बल हो और ईश्वर की चिन्ता करें) ।

३ महेरणाय परमात्मा चैतन्यरूप के चक्षसे दर्शन के लिये ।

४ यः जो वः तुम्हारा शिवतमः ब्रह्मज्ञान देनेवाला वा जीवनादि वा स्वर्गादि सुख देनेवाला रसः रस है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

५ तस्य उसका भाजयते भागी करो इ निश्चय करके नः हम को अर्थात वह अपना शिवतम रस हमको देवो ।

६ उशतीः चाहनेवाली वा कोमल सुभाववाली इव जैसे मातरः माता (होती है अर्थात जिस प्रीति से माता पालन करती है उसी प्रकार से) ।

७ तस्मा उसकी अरं तृप्ति को गमाम पहुँचावो वः जो तुम्हारा रस है अर्थात हे जल तुम हमको तृप्त कर देवो ।

८ यस्य जिसके क्षयाय निवास के लिये जिन्वथ तृप्ति करो अर्थात पंचाहुति के लिये एक देश में तृप्ति करो, श्लोक ७६ अ० ३ मनुः, १ जल, २ मेघ, ३ अन्न, ४ बीज, ५ प्रजा, यह पंचाहुति का क्रम है ।

९ आपः हे जल जनयथा ब्रह्म सुख भोग करावो च और नः हम को । अर्थात हे जल ब्रह्मज्ञान का सुख हमको होवे । वा हे जल अपने निवास से हम से प्रजा पुत्र उत्पन्न करावो ।

व्याख्या-ऊपर पृथक २ अर्थ कहे हैं अब इस जगह मिला के टीका लिखी है । हे जल तुम सब को सुख देते हो सो ऐसा जल अन्न और सब खानेवाली वस्तु हमको देवे जिस में हमको बल होवे और ईश्वर की चिन्ता करें और उस चैतन्य परमात्मा का दर्शन प्राप्त हो, हे जल तुम्हारा रस ब्रह्म को प्राप्त करानेवाला और जीवनादि स्वर्गादि तुम देनेवाले सो ऐसे रस का भाग निश्चय कर के हमको देवो जिस प्रकार से पुत्र को चाहनेवाली माता पालती है उसी प्रकार से तुम हमारी पालना करो और अपने रस से तृप्त करो उसके निवास के लिये एक देश में तृप्त करो अर्थात हृदय में बसने से तृप्त करो वा हम से प्रजा वा पुत्र उत्पन्न कराओ । हे जल हमको ब्रह्म सुख भोग कराओ अर्थात ज्ञान दो ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इस मार्जन के पहले चौथे सातवें आठवें पाद से हृदय पर और दूसरे पांचवें नौमे से पैरों पर तीसरे छठ से शिर पर मार्जन करें जैसा हर पाद में स्थान लिखे हैं। सातवें पाद में 'तस्मै' शब्द का 'तस्मा' हुआ है।

दूसरा मार्जन।

ओं कश्यपऋषिः त्रिष्टुपछन्दः आपो देवता सर्व मार्जनादौ विनियोगः।

टीका—इसके कश्यप ऋषि हैं त्रिष्टुप छन्द (४४) आप देवता सब मार्जनों के आदि में इसका विनियोग है।

ओं हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकाः यासुजातः कश्यपोयास्विन्द्रः याग्निं गर्भं दधिरे विरूपास्तान आपः शंस्योना भवन्तु ॥ १ ॥ ओं यासां देवा दिविकृण्वन्ति भक्ष्यंया अन्तरिक्षे बहुधा भवन्ति याग्निं ॥ २ ॥ ओं यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यन् जनानां याग्निं ॥ ३ ॥ ओं शिवेनमा चक्षुषा पश्यतापः शिवया तन्वोस्पृशतुत्वचमे मधुच्युतः शुचयोया पावकास्तान आपः शंस्योना भवन्तु ॥४॥

हिरण्यवर्णाः सुवर्ण के समान जिसका निर्मल वर्ण है **शुचयः**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पवित्र है (औ) पावकाः शुद्ध करनेवाला है यासु जिसमें जातः उत्पन्न हुये कश्यपः कश्यप ऋषि यासु जिसमें इन्द्रः इन्द्र देवता (यह सब जल का विशेषण है) हिरण्यवर्ण इस हेतु से कहा कि जल में परमात्मा ने जब शक्ति का वीर्य डाला तो उससे सोने के अण्ड १००० सूर्य के समान चमकता हुआ बना। या जो अग्निं अग्नि को अर्थात बड़वानल की अग्नि जो समुद्र में है गर्भं पेट में दधिरे लिये है विरूपाः जिसके अनेक प्रकार के रूप हैं अर्थात मेघ समुद्रादिक ता वो नः हमको आपः जल शंस्योना सुख देनेवाला भवन्तु होवे।

ओं यासां जिसको देवादि देवता आदि सब विकुर्वन्ति करते हैं भक्ष्यं भक्षण अर्थात पान या जो अन्तरिक्षे आकाश और पृथिवी के बीच में बहुधा बहुत प्रकार का भवन्ति होजाता है। २ याग्निं०

ओं यासां जिस का राजा राजा वरुणः वरुण देवता याति जाता है मध्ये अन्तःकरणमें सत्य धर्म (वा सच्चाई) अनृते (औ) अधर्म वा झूठ अवपश्यन् देखते हुये जनानां लोगों के अर्थात जल का देवता सभों का धर्म और अधर्म अन्तःकरण में जा के देखता है या जो अग्निं अग्नि को गर्भं पेट में। ३

ओं शिवेन परमार्थ ज्ञान देने की मा (मुझे) चक्षुषा आखों से पश्यत (मुझे) देखो आपः हे जल शिवया परमार्थ सुख देनेवाला अपना तन्वा अंग उपस्पृशत छुवाओ त्वच खाल में मे मेरी। मधुश्चुतः तुम अमृत बहानेवाले हो शुचयः शुद्ध और या जो पावकाः पवित्र करनेवाला है ता वो नः हमको आपः जल (हम को) शंस्योना सुख देनेवाला भवन्तु हो। या-ग्निं ४

व्याख्या. १ सोने का वर्ण पवित्र करनेवाला जिसमें कश्यप

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

उत्पन्न हुये और इन्द्र उत्पन्न हुये जो अग्नि को गर्भ में धारण किये हैं अनेक रूप उसके हैं । जल हम को सुख देनेवाला होवे। जल का हिरण्य वर्ण इस हेतु से कहा कि सोने कासा शुद्ध और निर्मल उसका वर्ण है पवित्र वस्तु है और शुद्ध करनेवाला है जिसमें कश्यप आदि ऋषि और इन्द्रादि देवता उत्पन्न हुये और लोगों की क्या गिन्ती है मनुः पहले परमात्मा ने जल बनाया और उसमें अपनी शक्ति का वीर्य डाला वो सुवर्ण का अण्डा ऐसा हुआ कि उसकी कांति चमक १००० सहस्र सूर्य के समान हुई। २ उस जल के अनेक रूप हैं आकाश में समुद्रादिक में ठहरा है और अग्नि अर्थात बड़वानल अग्नि इत्यादि अपने गर्भ में लिये है सो ऐसा जल हमको सुख देवे जिसको देवताआदि पान करते हैं और जो अन्तरिक्ष में अनेक प्रकार का हो जाता है—जो जल तीन वर्ण अर्थात ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य देव और पितृ इत्यादिकों को तर्पण इत्यादि से आकाश में स्वर्ग में देते हैं वो जल अपने २ लोकों में वो लोग खाते हैं उसके खाने से बल होता है उसका हविष्य रूप है सो उसके अनेक रूप हो जाते हैं इस हेतु से देवता भी उस को ग्रहण कर सकते हैं श्रुतिः देवता लोग मुख्य तप में अपना जीवन करते हैं अर्थात तप किया करते हैं मनुष्य उनके जीवन में जल देने से सहायता करते हैं यद्यपि अनेक वस्तु उनको सुलभ है परन्तु देवता तपस्या में पड़े रहते हैं अपने आप कोई वस्तु ग्रहण नहीं करते जब मनुष्य चावल घी मिला हुआ उत्तम भोजन देते हैं तब उनको पहुंचता है इस हेतु से समझा जाता है कि जो मनुष्य तर्पण देवता का करते हैं उनकी सहायता देवता करते हैं । मेघमाला पानी इत्यादि स्वरूप अन्तरिक्ष में जल के हुआ करते हैं । ३ जिसका राजा वरुण मनुष्यों के अन्तःकरण के मध्य में धर्माधर्म देखते हुये जाता है

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भीतर बाहर जल मनुष्यों के पहुंचता रहता है सो इससे निश्चय हुआ कि वो जलका राजा सब धर्माधर्म्म हमारे देखता रहता है अभिप्राय यह है कि जल व्यापक रूप है हमको अधर्म न करना चाहिये क्योंकि वो जल सब देखता है । ४ हे जल परमार्थ सुख ज्ञान देने की दृष्टि से मुझे देखो और अपना परमार्थ सुख देने वाला अंग मेरे अंग में छुलाओ तुम अमृत हो शुद्ध और शुद्ध करने वाले हो सो तुम हमको सुख देने वाले बनो । हे जल तुम हमको परमार्थ ज्ञान देवो और सुख हमें दो । तीन प्रकार के ताप से बचाओ (१) आध्यात्मिक अर्थात् ज्वर और मन के सोच और अनेक संकल्प से जो ताप होती है (२) आधिदैविक अर्थात् देवताओं के कोप इत्यादि से जो ताप होती है वा मन इन्द्री अग्नि वायु अति वृष्टि अवृष्टि अति शीत अत्युष्णेत्यादि से जो क्लेश होते हैं (३) आधिभौतिक भूत पदार्थ से शत्रु सर्पादिक से जो ताप होती है ये तीन प्रकार की ताप हैं तो यह बात तो प्रसिद्ध है कि जल से दाह दूर हो जाती है सो हे जल तुम अमृत हो और पवित्र हो और पवित्र करने वाले हो सो तुम हम को सुख देवो ।

तीसरा मार्जन ।

सिन्धुद्वीपऋषिः गायत्री छन्दः ।
आपो देवता मार्जने विनियोगः ॥

इस के सिन्धुद्वीप ऋषि हैं गायत्री छन्द आप देवता हैं मार्जन में विनियोग इस का है ।

ओं शन्नोदेवी रभिष्टये आपो
भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवंतुनः॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शम कल्याण और सुख देने वाला **नः** हम को होवे **देवीः** वह जल जो दानादि गुण युक्त है और आनन्द देने वाला है **अभिष्टये** मनोरथ के लिये अर्थात ब्रह्म प्राप्त के फल और और फल जिसकी २ इच्छा हो **आपः** जल (ये अर्थ "देवीः" के साथ हो गया) **भवन्तु** होवे अर्थ नः के साथ हो गया **पीतये** सुख के परिणाम बनाने वाला है **शं** नित्यानन्द सुख यः आत्मा को (कर) **अभिस्रवन्तु** दुःख का अभाव करे **नः** हम को ।

व्याख्या--जिस जल के दानादि गुण हैं अर्थात अनेक प्रकार के उपकार कर्त्ता है वो हमको सुख देवे और मनोरथ उत्तम कामना ब्रह्म प्राप्त होने के लिये हमारी सहायता करे और अपने रस के द्वारा जो अन्न इत्यादिक पचाता है और देह में पहुंचता है और जो पाक होते हैं वो जल की सहायता से ऐसे होवें कि सुख होवे अर्थात सुख देने वाला पाक अन्न का बने और अत्यन्त सुख हमको होवे और हमारी आत्मा का दुःख दूर करे अर्थात नित्यानन्द सुख हम को प्राप्त होवे ।

चौथा मार्जन ।

अद्दैवता अनुष्टुप् सोमपुत्रस्याध्वरस्य ।

टी० इस मार्जन का देवता आप और अनुष्टुप्छन्द है सोम के पुत्र अध्वर ऋषि हैं ।

ओं शन्नआपोधन्वन्याः शन्नःसन्त्व नूप्याः
शन्नः समुद्रियापः शमुनासंतु कूप्याः ॥

शन् सुख देनेवाला **नः** हम को **आपः** [वही] जल **धन्वन्याः** जो विना जल के देश और जांगलदेश में होता है **शन्** सुख देनेवाला

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नः हम को **सन्तु** होवे वह जल **अनूप्याः** जो ऐसे देश में होता है जहां जल बहा करता है अर्थात् जहां नदी झरना हैं **शन्** सुख देवें वह जल **नः** हम को **समुद्रिया** समुद्र में होता है **आपः** जल **शमुना** सुख देनेवाला **सन्तु** होवे वह जल **कूप्याः** जो कुवों में होता है।

व्याख्या—वह जल हमारे सुख के लिये होवे जो माड़वाड़ में और जांगल देश में है और जो उस देश में है जहां जल बहता है अर्थात् जहां नदी है वह हमारा कल्याण करे सुख दे जो समुद्र में है जो कुए में है।

इस मार्जन का अर्थ वहुत सुलभ है माड़वाड़ जांगल में होना जल का इस हेतु से कहा कि वहां दुर्लभ होता है आशय यह है कि दुर्लभ और सुलभ सभी स्थान में होता है और उस से सुख होता है।

पांचवां मार्जन।

आपोअस्मान्नित्यस्यात्रिष्टुपऋष्यादि

आपोअस्मान्नित्यस्य ऋचा का छन्द त्रिष्टुप् है ऋषि ऊपर कहे हैं।

ओं आपोस्मान्मातरः सूदयंतु घृतेनमा घृतप्वः पुनंतु। विश्वंहिरिप्रं प्रवहंतिदेवी रुदिदाभ्यः शुचिरापूत एमि।

ओं आपः जल **अस्मान** हमारी **मातरः** माता (वह है) **सूदयन्तु** दूर करे पाप **घृतेन** शुद्ध रूप से सार रूप से मा मुझे **घृतप्वः** वीर्य रूप और तेज रूप से **पुनन्तु** शुद्ध करे **विश्वं** संसार को अर्थात् जगत **हि** ही **रिप्रं** पाप **प्रवहंति** दूर करता है देवी और दान औ द्योतनादि गुण जल के हैं और प्रकाशमान है वह दाता है **उत्** उत्तम

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्थान मोक्ष में इत् स्वर्ग में आभ्यः जलों से आप शब्द सदा बहु वचन होता है शुचिः शुद्ध (और) आपूतः पवित्र करके हम को एमि पहुंचावे ।

व्याख्या—आप जल व्यापक होने से जगत की माता है और उदार है सो ऐसा जल हमारे पाप नाश करे और वीर्यरूप से हम को पवित्र करे और उत्तम स्थान में स्वर्ग में पहुंचावे अर्थात् स्वर्ग और मोक्ष होवे । ब्राह्मण सर्वस्व में सूदयन्तु के स्थान पर शुन्धयन्तु है उसका अर्थ यह है कि शुद्ध करे ।

छठवां मार्जन ।

ओं निचांकुणशौनः शेफस्यानुष्टुप्

निचांकुणशौनः शेफऋषि इसका है अनुष्टुप् छन्द है । यह पांच ऋचा का मार्जन है ।

ओंइदमापः प्रवहतयत्किंचिद्दुरितं मयि ।
यद्वाहमभिदुद्रोयद्वाशेपउतानृतम् ॥

ओं इदं ये आपः जल प्रवहत दूर करे यत जो किंचित कुछ दुरितं बुराई पाप मयि मुझ में हो यद्वा वा जो अहम् हमने अभि सब प्रकार से दुद्रोह बुराई की यद्वा वा जो शप निन्दा की हो उत और भी अनृतम् झूठ (बोला) यह दोष हमारा जल दूर करे ।

व्याख्या—हे जल जो कुछ मुझ में पाप हो अर्थात् इन्द्रियों की चापल्यता से हम ने किया वह दूर करो वा जो हम ने किसी की बुराई और बैर किया और निन्दा की और झूठ बोला सब पाप हमारे दूर करो ॥ १ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओं मुञ्चन्तुमाशपथ्याद्थोवरुण्यादुत् अथो यमस्य पड्वी शात्सर्वस्मादेव किल्विषात् २ ॥

मुञ्चन्तु छुड़ावो **मा** मुझे **शपथ्यात्** उस पाप से जो माता की कुक्षि में बात कहने से किया **अथो** फिर **वरुण्यात्** योनि यन्त्र की फांसी अर्थात शरीर के बन्धन से छुड़ावो **उत** भी **अथो** फिर **यमस्य** यमकी **पड्वीशात** फांसी से **सर्वस्मात्** सब **एव** ही **किल्विषात्** पापों से छुड़ावो ।

व्याख्या—छुड़ावे मुझे सौगन्द से अर्थात् मा के पेट में मैं ने जो ईश्वर के दर्शन समय सौगन्द की थी वा कहा था कि मैं तुझे नहीं भूलूंगा और उचित वेदानुसार कर्म करूंगा सो जब जन्म हुआ तब यह सब बातें भूल गया तो वह सौगन्द कहना मानो झूठ हुआ सो उसका जो पाप हुआ उससे मुझे हे जल छुड़ाओ। योनि यन्त्र की फांसी से छुड़ाओ शरीर के बन्ध से छुड़ाओ अर्थात् मोक्ष देओ इसका दूसरा अर्थ जल देवता की फांसी से छुड़ाओ अर्थात् नदी में जो रात को वरुण का पहरा रहता है वा और भंवर इत्यादि जो जल की फांसी है उससे छुड़ाओ फिर यम की फांसी से छुड़ाओ सब पापों से छुड़ाओ ॥ २ ॥ इसका छंद गायत्री है ।

ओं यज्जाग्रद्यत्सुप्तः पापमभिजगाम । सर्वस्मान्मा तस्मा देनसः प्रमुञ्चंतु ॥३॥

यद् जो **जाग्रत्** जागते में **यत्** और जो **सुप्तः** सोते में **पापं** पाप **अभिजगाम** मैंने किया **सर्वस्मात्** सब **एनसः** पापोंसे **प्रमुंचंतु** छुड़ाओ ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हे जल जो जागते में वा सोते में जान के वा अज्ञान से पाप मैंने किया सब पापों से मुझे छुड़ाओ ।

ओं दधिक्राब्णोअकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभिन्नो मुखाकरत्प्रण आयूंषितारिषत् ॥ ४ ॥

इसका अनुष्टुप् छन्द है और नारायण ऋषि हैं **दधिक्राब्ण** जो पचाने वाली अग्नि है **अकारिषं** (उसको) मैं तृप्त कर्त्ता हूं **जिष्णोः** उसका स्वभाव विजय करने का है **अश्वस्य** अन्न की इस शब्द को सुरभिं से सम्बन्ध है **वाजिनः** अन्न पति है सो **सुरभिं** सुगन्ध युक्त **नः** हमारे **मूखाकरत्** मुखको करे जिस में सुगन्ध के डकार आवें **प्र** ये उपसर्ग है **तारिषत्** क्रिया में मिला के अर्थ बनता है **नः** हमें **आयूंषि** आयुबल **तारिषत्** देवे ।

दधिक्राब्ण जो पचानेवाली अग्नि उदर में है उसको मैं तृप्त कर्त्ता हूँ वह विजय करनेवाली है अर्थात जीतने का उसका सुभाव है और अन्न पति है वह सुगन्ध युक्त मुख को करे सुगन्ध का डकार आवे हम को आयुर्वल देवे यह पढ़ते हुये कुशा से अपने ऊपर पानी छिड़के देव तीर्थ से अर्थात् हथेली में पानी लेके ।

कोकिलो राज पुत्रश्च द्रुपदा दार्षमुच्यते अनुष्टुभंभवेच्छन्दो आपश्चैवतु दैवतं सौत्रामण्या मव भृथस्नाने तद्विनियोजयेत ॥

इस मन्त्र के कोकिल राज पुत्र ऋषि हैं अनुष्टुप् छंद है आप देवता सौत्रामणी यज्ञ के पश्चात अव भृथ स्नान में इसका सम्बंध है । तीन बार पढ़ना और जल को दाहिने हाथ के चिल्लू में थामना फिर जल को सूंघ के बांयें ओर फेंक देना ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पहला अघमर्षण ।

ओं द्रुपदादिवेन्मुमुचानः स्विनः स्नात्वी मला । दिवपूतं पवित्रेणे वाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः ॥

द्रुपदात् काठ बंधन से इव जैसे उन्मुमुचानाः छूटा हुआ मनुष्य स्वतंत्र हो जाता है स्विन्नः पसीने में भरा हुआ हो तो स्नात्वी जब नहाया मलात् मल से छूटा इव जैसे । पूतम् पवित्र हो जाता है । पवित्रेण कुशा से इव जैसे आज्यम् घी (उसी प्रकार से) आपः जल शुन्धन्तु शुद्ध करे मा मुझे एनसः पापों से ।

व्याख्या- जल बड़ा उत्तम पदार्थ है ईश्वर स्वरूप है वह हम को पाप से छुड़ावे अर्थात् अच्छी गति करे जिस प्रकार से मनुष्य काठ के बंधन से छूट के स्वतंत्र हो के जहां चाहता है चला जाता है वा पसीने में भरा हुआ मनुष्य जब व्याकुल हो जाता है अर्थात जहां पवन न चलती हो वहां मनुष्य बैठे तो पसीने में भर जावे तो फिर उष्ण जल से स्नान करे और मल छुड़ावे तो प्रसन्न हो जावे । जिस प्रकार कुशा छुड़ाने से घृत पवित्र हो जाता है उसी प्रकार से हमको भी जल पापों से छुड़ावो ।

अघमर्षण सूक्तस्य ऋषिरेवाघमर्षण
अनुष्टुपं भवेच्छंदोभाव वृत्तन्तुदैवतं
अश्वमेधस्यावभृथेविनियोगस्यकल्पितः

टी०—इस अघमर्षण के ऋषि अघमर्षण ही हैं अनुष्टुप् छंद और भाववृत्त देवता है अश्वमेध यज्ञ के अवभृथ स्नान में यह ऋचा पढ़ी जाती है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दूसरा अघमर्षण ।

ओं ऋतंच सत्यं चाभीद्धात्तप सोध्य जायत ।
ततो रात्रि रजायत ततः समुद्रोऽर्णवः ॥
समुद्रादर्णवा दधि सम्वत्सरो अजायत ।
अहो रात्राणि विदधद्वि श्वस्यमिषतो वशी ॥
सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्व्व मकल्पयत् ।
दिवञ्च पृथिवीं चान्तरिक्त मथोस्वः ॥

अघमर्षण का अर्थ पाप मोचन प्रायश्चित्त है श्लो० २५६ अ० ११ मनुः ।

ओं ऋतं यह एकाक्षर ब्रह्म अर्थात् ओं वा मन का यथार्थ संकल्प **च** और **सत्यं** अनन्त ज्ञान वा सच बोलना **अभीद्धात्** सब भाव करके दीप्त प्रकाशित (यह विशेषण तपसः का है) **तपसः** अनन्त सामर्थ ईश्वर से **अध्यजायत** उत्पन्न हुये **ततः** तब ईश्वर की शक्ति से **रात्रिः** अंधकार मात्र अर्थात् आकाश वा दिन रात्रि **अजायत** हुआ । और उसके संबन्ध से वायु, वायु से अग्नि अग्नि से आप, आप से पृथिवी । **ततः** तब ईश्वर से **समुद्रः** समुद्र वा संसार रूपी समुद्र **अर्णवः** चर वा अचर अनेक पूर्व जन्मों के शुभाशुभ कर्मों से मिला हुआ वा लवणोदादि सागर हुये । **समुद्रात् अर्णवात्** पूर्वोक्त समुद से **अधि** अनन्तर पीछे **सम्वत्सरः** वर्ष वा काल जो बहुत वेग से जाता है हर पल में आयु हरता है **अजायत** उत्पन्न हुआ **अहोरात्राणि** दिनरात को **विदधत** उत्पन्न किया बनाया **विश्वस्य** संसार की **मिषतो** चेष्टा के लिये **वशी** जितेन्द्रिय (यह धाता का विशेषण है,) **सूर्य्याचन्द्रमसौ** सूरज चांद **धाता** ब्रह्मा ने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वा परमेश्वर ने **यथा** जैसा **पूर्व्वम्** पहले कल्प में थे उसी प्रकार से **अकल्पयत** संकल्प मात्र में बनाये **दिवं** स्वर्ग लोक **च** और **पृथिवीं** पृथिवी लोक बनाया **च** और **अन्तरिक्षं** आकाश बनाया **अथो** तब **स्वः** स्वर्लोक इत्यादि लोक महः जनः तपः सत्यं रचे।

व्याख्या—जब ब्रह्मा जी विष्णु की नाभि कमल से उत्पन्न हुये तो उन्होंने संसार के रचने की कल्पना चिन्ता की वह आदि देव और संसार के बड़े गुरू हैं तब उनको भ्रम हुआ और सोच हुआ कि कौन युक्ति की जाय जिस से जगत रचा जावे इसी चिन्ता में ब्रह्मा जी थे कि उनको आकाशवाणी हुई **तप तप** अर्थात् तपस्या करो तपस्या करो। जब तपस्या की तो परमात्मा ने अपनी कृपा से ब्रह्मा जी को ज्ञान दिया। सृष्टि के आदि में ओंकार प्रकट हुआ उसी से वेद हुये तब सात आकाश हुये और उस से वायु सम्पूर्ण हुई वायु से अग्नि और अग्नि से जल हुआ जल से पृथिवी हुई तब अर्णव अर्थात पञ्चभूतात्मक स्थावर जंगम हुये परन्तु पूर्व जन्म के शुभाशुभ कर्म सब के साथ बने रहे कि वह कर्म का फल भोगें। ८४००००० चौरासी लाख जीव हुये तब इसके पीछे वर्ष जिसमें ३६० दिन होते हैं हुआ इस हेतु से यह काल हुआ जिसमें वैराग्य होवे क्योंकि काल हर पल में वितीत होता है रुक नहीं सक्ता है मानो काल एक महा बलवान राजा है और किसी के रोके रुक नहीं सक्ता है और दिन रात मानो उसके गन्धर्व और उनकी स्त्रियां नाचती गाती हैं तब ब्रह्मा ने दिन रात बनाये और सूर्य और चन्द्रमा भी बनाये जिसमें रात और दिन में भेद जान पड़े वह धाता बड़े जितेन्द्रिय हैं उन्होंने जागने के लिये दिन और सोने के लिये रात बनाई जैसे पहले कल्प में बने थे तब आकाश और स्वर्गलोक और पृथिवी और अन्तरिक्ष और स्वः महः

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जनः तपः सत्यलोक बनाये । जब यह मंत्र पढ़े तो हाथ में जल लिये रहे फिर सूंघ के छोड़ दे ।

आगे दूसरा शब्दार्थ इसी ऋचा का तैत्तिरीय आरण्यक के अनुसार लिखेंगे । तीन २ बार जप इस ऋचा का जल लेके त्रिकाल में सब पाप काटता है श्लोक० २५९ अ० ११ मनुः ।

ऋतं मन का यथार्थ संकल्प **सत्यं** सच बोलना **चाभीद्धात** सब भाव से जो परमात्मा प्रकाशमान है उसी की **तपसोधि** ज्ञानमय सृष्टि रचना की सामर्थ से उत्पन्न हुये **ततः** उसी स्वप्रकाश ईश्वर से **रात्रि** रात और उसका सम्बन्धी दिन भी हुआ **ततः** उसी परमेश्वर से **समुद्र** जल समुद्र अर्णव शब्द से लवणोद क्षीरोद दध्यादि सब सागर का उत्पन्न होना विशेष जानना **समुद्रात्** समुद से पीछे **सम्वत्सरः** काल उत्पन्न हुआ **अहोरात्राणि विदधत** दिन रात्रि सब काल विशेष बनाये विश्वस्य सब प्राणी जात **भिषतः** पलमात्र वा छिनमात्र में बनाये उस **वशी** वश करनेवाले स्वामी **धाता** परमेश्वर ने **सूर्याचंद्रमसौ** (इत्यादि) सूर्यादि सब देवता पृथिवी आदि सब लोक उसी प्रकार से संकल्प मात्र में बनाये जैसे पहले कल्प में सृष्टि की गई थी सुवः शब्द से भोग विशेष समझा गया है । और जो मूल के शब्द इस टीका में छोड़ दिये हैं वह सुलभ हैं विशेष कुछ नहीं है । स्वः के स्थान में सुवः भी पाठ है ।

मार्जन ।

ओं भूः ओं भुवः ओं स्वः ओं महः
ओं जनः ओं तपः ओं सत्यम् ।

व्याख्या—माथे में इन व्याहृतियों से जल छिड़के तब आगेवाला मंत्र पढ़के आचमन करे ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओं नारायण ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः परमात्मा देवता आचमने विनियोगः ॥ टीका स्पष्ट है ॥ इसके पीछे आचमन अन्तश्चरसि ।

आचमनम् ।

ओं अन्तश्चरसिभूतेषु गुहायांविश्वतोमुख स्त्वंयज्ञस्त्वं वषड्कार आपोज्योतिरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम् ॥ १ ॥

अन्तः (हे जल तुम) अन्तःकरण में **चरसि** चलते हो अर्थात् वर्त्तमान हो **भूतेषु** सब प्राणी पदार्थों में **गुहायां** हृदय के भीतर **विश्वतोमुखः** विश्व संसार में व्याप्त हो **त्वं** तुम ही **वषड्कारः** साधक रूप अर्थात् यज्ञ के पूरे करनेवाले हो वा यज्ञ की सामग्री रूप हो **आपः** हे जल (यह शब्द प्रारंभ में संबोधन में आगया है और जल का विशेषण रस रूप से है इसका अर्थ आप्लृधातु से व्याप्त भी है) **ज्योतिः** (तुम) ज्योति रूप भी हो (क्योंकि ज्ञान का प्रकाश करते हो) **रसः** रस रूप **अमृतं** अमृत अर्थात् नित्य आनन्द देनेवाले हो ।

पूर्वोक्त चार विशेषण से व्यापकत्व जल का है **ब्रह्म-भूर्भुवः स्वरोम्** भूः भुवः स्वः तीन लोकों के आत्मकत्व होने से वा उन में व्यापक होने से हे जल तुम ब्रह्म स्वरूप हो ।

टीका—हे जल तुम सब प्राणी और पदार्थों के अन्तःकरण में वर्त्तमान हो और संसार में व्यापक हो यज्ञ इत्यादि जितने रूप मूल में कहे हैं । सब तुम्हारे ही रूप हैं ।

निवेदन—जहां २ आचमन के मंत्र कहे हैं तीन २ आचमन प्रणव पढ़के करना ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इस मन्त्र के पीछे प्राणायाम करे तब गायत्री मन्त्र से प्रातःकाल और सायंकाल में तीन अंजुली भर जल सूर्य देवता को इस प्रकार से देवे कि आकाश की ओर उछाल देवे ।

अंजुली का आशय ये है उदय और अस्त में तीन सौ कोटि राक्षस सूर्य देवता से युद्ध करते हैं सो जो गायत्री पढ़के सब देवगण ऋषि जो तप के धनी हैं जल उछालते हैं वह बज्र होके राक्षसों को लगता है तब राक्षस हार जाते हैं । यह बात जानके जो विप्र उपासना करता है उसकी बड़ी आयु होती है और सब पापों से छूटता है ।

सूर्य का ध्यान ।

ॐ उद्यंतमस्तं यन्तमादित्यमभिध्यायन् कुर्वन्ब्राह्मणोविद्वानसकलं भद्रमश्नुतेसवादित्यो ब्रह्मेतिब्रह्मैवसन् ब्रह्माप्येतिय एवंवेद ॥

व्याख्या—यह दृश्यमान सूर्य ब्रह्म ही है सो जो मनुष्य उदय और अस्त में इसका ध्यान और प्रदक्षिणा करे उसका सब प्रकार का कल्याण होता है निश्चय इस सूर्य को ब्रह्म जाने तो ब्रह्म पदवी प्राप्त होती है ध्यान और प्रदक्षिणा करके उपस्थान सूर्य का करे ।

उपस्थान की ऋचों में साकार पक्ष में सूर्य ही को वर्णन किया है और हंसः ऋचा में जो जो विशेषण सूर्य के कहे हैं उनके प्रत्यक्ष प्रमाण से सूर्य में ब्रह्मत्व पाया जाता है दूसरी ऋचा उदुत्यं से यह प्रकट है कि यह एक ही सूय सब लोकों में प्रकाश करता है ।

उपस्थान ।

बृहस्पतेरनुष्टुप्सूर्योदेवता उपस्थानेविनियोगः ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

टीका—वृहस्पति इसके ऋषि अनुष्टुप् छन्द सूर्य देवता हैं उपस्थान से सम्बन्ध है ।

ओं उद्वयन्तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम् ।
देवन्देवत्रा सूर्य्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥ १ ॥

उत ऊपर--यह उपसर्ग अगन्म क्रिया से मिलती है **वयम्** हम **तमसः** अज्ञान के अंधकार से **परि** परे वा ऊपर **ज्योतिः** (ब्रह्म लक्षण) जोत वा तेज को **पश्यंतः** देखते हुये **उत्तरम्** (जो) उत्तम (जोत है) **देवम्** (और) प्रकाशमान है **देवत्रा** देवतों की पालनेवाली वा सब जीवों की पालनेवाली । **सूर्य्यम्** सूर्य मण्डल में वर्त्तमान है । **अगन्म** ऊपर जाते हैं । ज्योतिः वह जोत **उत्तमम्** उत्तम श्रेष्ठ है ।

टीका–"उपस्थान" शब्द का अर्थ समीप और स्तुति और खड़े होके वा और रीति से उपासना का है इस में प्रार्थना कृतांजलि बना कर करना चाहिये ऋचा का अर्थ यह है ।

हम ईश्वर से यह प्रार्थना करते हैं कि तमस जो अज्ञान का अन्धकार है उसके ऊपर जो सर्वोतम बड़ी उत्तम ब्रह्म लक्षण ज्योति है उसे देखने को पहुँचावे वह तेज उतम और प्रकाशमान ऐसा है जिस की उपमा सम्भव नहीं । शाखाचन्द्रन्याय से यह कहते हैं कि सूर्य मण्डल में वर्त्तमान है ।

सूर्य मण्डल तो उस ब्रह्म के तेज से चमक रहा है और वही सब देवताओं और जीवों का पालनेवाला है । आशय यह है कि हमें ईश्वर का ज्ञान होवे अज्ञान छूटे । जैसे कोई पूछे कि चांद कहां पर निकलता है वह बतावे कि उस पेड़ की डाल के ऊपर इस पते से पूछनेवाले को दूज का चांद दिखलाई देता है सो चांद तो डाल पर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

नहीं पर पता देने से देख पड़ता है । यह शाखाचन्द्रन्याय है इस रीति से परमात्मा को बताते हैं ।

ओं प्रस्कण्व ऋषि गायत्रं छन्दः ।
सूर्यो देवता अतिरात्रे विनियोगः ॥

टीका—इस ऋचा के प्रस्कण्व ऋषि हैं और गायत्री छन्द और सूर्य देवता हैं । अतिरात्रि यज्ञ में इसका विनियोग है ।

ओं उदुत्यंजातवेदसन्देवं वहन्तिकेतवः ।
दृशेविश्वायसूर्यम् ॥२॥

उत ये उपसर्ग वहन्ति क्रिया में मिलाके अर्थ बनता है **उ** उत्कृष्टार्थ है **त्यम्** उस **जातवेदसम्** सब का जाननेवाला ज्ञान देने वाला **देवम्** दानादि गुण युक्त (जो सूर्य है) उसको उदय करती हैं **केतवः** किरैं **दृशे** देखने को **विश्वाय** तीनों जगत के लिये **सूर्यम्** सूर्य देवम् में मिलाके अर्थ इसका हो गया ॥२॥

टीका--वह सूर्य सब जगत का जाननेवाला ज्ञान देनेवाला सर्व व्यापी है और दानादि गुण युक्त है अर्थात् सब वस्तु का देनेवाला है उसकी किरैं अर्थात् अत्यन्त तेज तीनों जगत् के प्रकाश के लिये फैला है तीनों लोकों के प्रकाश करने के लिये उदय होता है ॥२॥

त्रितः कुत्सो वा ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ।
सूर्यो देवता अतिरात्रे विनियोगः ॥

टीका--त्रितः वा कुत्स इसके ऋषि त्रिष्टुप् छन्द है सूर्य देवता है अतिरात्रि यज्ञ में विनियोग है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ओं चित्रन्देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः । आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्यआत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ३ ॥

चित्रम् (यह त्रयी मूर्ति) अद्भुत सूर्य **देवानाम्** देवादिकों का (चक्षु नेत्र है) **उदगात्** उदय हुआ **अनीकम्** (और) जब किर्णों का समूह अर्थात् बहुत तेज (फैला) **चक्षुः** नेत्र (देवानाम् के साथ अर्थ कहा) **मित्रस्य** मित्र (यह सूर्य का भी नाम है) **वरुणस्य** वरुण (जल का देवता) **अग्नेः** और अग्नि का (वह नेत्र है) **आप्रा** भर दिया वा छा गया (ये आशय इस शब्द का है) **द्यावापृथिवी** पृथिवी और आकाश में **अन्तरिक्षम्** अन्तरिक्ष में **सूर्य्य** वह सूर्य **आत्मा** चैतन्य आत्मा है **जगतः** जंगम का **तस्थुषः** (और स्थावर का) अर्थात वह सूर्य सब संसार में व्याप्त है **च** ऊपर अर्थ इसका होगया ।

व्याख्या--यह दृश्यमान सूर्य जब उदय होता है तब ब्रह्मरूप होता है मध्याह्न में महेश्वर । अस्त होने पर विष्णु स्वरूप होता है इस हेतु से त्रयी मूर्ति दिवाकर कहलाता है यही 'चित्र' का आशय है मनुजी लिखते हैं कि मनुष्यों और देवों के दिन रात का यही सूर्य विभाग करता है । एक वर्ष इस लोक का देवताओं का रात दिन इसप्रकार से है उत्तरायण का दिन और दक्षिणायन की रात होती है । एक महीना इस लोक का पित्रों का एक दिन होता है कृष्ण पक्ष का दिन और शुक्ल की रात होती है और साठ (६०) दण्ड का दिन रात मनुष्यों का होता है । यह सब अद्भुत बातें हैं 'चित्र' का यही आशय है सो यह सूर्य आप प्रकाशित है और चन्द्रमा और सब नक्षत्रों को प्रकाशित करता है और देवादिकों का नेत्र है अर्थात् उनकी आंखों में प्रकाश

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

देता है और किरणों का समूह है और मित्र और वरुण और अग्नि का नेत्र है सो ऐसे सूर्य ने अपने प्रकाश से सारे आकाश पृथिवी और अन्तरिक्ष को स्वर्ग को प्रकाशित कर दिया और यह सूर्य सब स्थावर जंगम का आत्मा है अर्थात् सब संसारमय यही सूर्य है। **ब्रह्मणोनुष्टुप्** टीका—ऋषि इस के ब्रह्मा और छन्द अनुष्टुप् है अतिरात्रि में विनियोग है।

ओं तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतम् शृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतम दीनाःस्याम शरदः शतम् भूयश्चशरदःशतात्

तत् वह पूर्वोक्त **चक्षुः** सूर्य रूप चक्षु **देवहितम्** देवों की इच्छा पूरी करने वाली **पुरस्तात्** पूर्व दिशा से **शुक्रम्** (और वो चक्षु) शुद्ध निर्मल है **उच्चरत** (वह) उदय होती है (उसकी कृपा से) **पश्येम** हम देखें **शरदः** वर्ष **शतम्** सौ तक **जीवेम** जीवें **शरदः** वर्ष **शतम्** सौ तक **शृणुयाम** सुनें **शरदः** वर्ष **शतम्** सौ **प्र** अच्छे प्रकार से **ब्रवाम** बोलें कहें **शरदः** वर्ष **शतम्** सौ तक **अदीनाः** स्वाधीन (ही) **स्याम** रहें **शरदः** वर्ष **शतम्** सौ **भूयः** और अधिक वा पुत्र पौत्रादि द्वारा **च** भी **शरदः** वर्ष **शतात्** सौ से ऊपर (देखें, जीवें, सुनें, कहें, स्वाधीन हो रहें)।

टीका—तीसरी ऋचा में जो सूर्य रूप चक्षु का वर्णन किया है वह चक्षु देवों की इच्छा पूर्ण करने वाला है और पूर्व दिशा से उदय होता है और निर्मल है अर्थात् श्री सूर्य भगवान पूर्व में उदय होते हैं सो उनकी ही कृपा से हम लोग उनको सौ वर्ष तक देखें और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

जीवें उनका वर्णन सौ वर्ष तक सुनें कहें और स्वाधीन रहें और सौ वर्ष से अधिक भी वंश पुत्र पौत्रादि द्वारा देखें जीवें सुनें कहें और पराधीन न रहें।

दूसरे भाष्यकार अर्थ ऐसा लिखते हैं कि वह ब्रह्म चक्षु सर्व दृक्चैतन्य है और विद्वानों के लिये और सब सेवकों की हितकारी मोक्ष आदि सुख की देनेवाली है पुरस्तात् सब का प्रथम आदि कारण वही है शुक्र सब का करनेवाला वा शुद्ध स्वरूप है "उच्चरत" प्रलय के ऊपर वह ही रहता है उसी की कृपा से हम लोग सौ वर्ष तक देखें जीवें सुनें कहें और पराधीन न होवें अर्थात् ब्रह्मज्ञान बुद्धि पराक्रम सहित इन्द्रियां और शरीर सुस्थिर रहें ऐसी कृपा ईश्वर करे कि कोई अंग मेरा निर्बल न होवे और सौ वर्ष से अधिक भी हम देखें जीवें सुनें कहें स्वाधीन ही रहें ॥ ४ ॥

वामदेवस्य जगतीपरमात्मरूपः सूर्योदेवताउपस्थाने विनियोगः ॥

टीका--इस ऋचा के वामदेव ऋषि और जगती छन्द है परमात्मा रूप सूर्य इसका देवता है । उपस्थान से इस ऋचा को सम्बन्ध है ।

ओं हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदि षदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वर सदृतसद्व्योमस दब्जागोजाऋतजा अद्रिजाऋतंवृहत् ॥ ५ ॥

ओं हꣳसः नारायण । वा जो पुरुष सदा आदित्य रूप से चलता है वा दृश्यमान सूर्य शुचि तेज स्वर्ग वा नित्यानन्द सुख में जो सद् विराजता है वसु जो वर्षा के द्वारा दृश्यमान सुख रूप से वा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आदित्य रूप से जो परमात्मा जगत् को बसाता है **अन्तरिक्ष** अन्तरिक्ष में [वायु रूप से वा अन्तर्यामी रूप से] **सद्** जो व्याप्त है। **होता** जो पुकारने वाला है (रात्रि के सोने वालों को काम काज करने को जगाता है) **वेदि** जो हवन की वेदी में अग्नि रूप से वा नित्य ज्ञान में जो **सद्** रहता है **अतिथिः** अतिथि समान है वा अग्नि आदि देवता भाव से जो नित्य रहता है **दुराण** जीवात्मा निवास के शरीर में **सद्** रहता है **नृ** मनुष्यों वा सब चैतन्यों में प्राणादि भाव करके सद् जो रहता है (वा नत्रों के प्रकाश का जो कारण है) **वर** आकाश में देव रूप से वा जो उत्कृष्ट स्थान नन्दनवन और महदादि लोकों में **सद्** रहता है **ऋत** यज्ञ में देवता भाव से वा सत्य नित्य और चैतन्यभाव से सद् (जो) रहता है व्योम भीतर बाहर बुद्धि और काल रूप से सद् (जो) रहता है **अब** जो जल में **जा** उत्पन्न होता है (वा प्रातःकाल जो जल से निकलता है और सायंकाल उसमें अस्त होता है) **गो** स्वर्ग वा अन्तरिक्ष में **जा** जो इन्द्रादि और सूर्य रूप से जाता है वा पृथिवी में जो औषधादि रूप से जो उत्पन्न होता है **ऋत** सत्त्वज्ञान में **जा** जो रहता है **अद्रि** उदयाचल पहाड़ से **जा** जो निकलता है प्रकट होता है **ऋतम्** सत्य परब्रह्म वा सूर्य है **बृहत्** जगत् रूप ईश्वर जो अज्ञानता से मिला है। ज्ञान दृष्टि से ब्रह्म ही है। सो हम उसको प्राप्त हों वा उसके निकट पहुंचे। यह प्रार्थना हमारी है। यद्यपि मूल में प्रार्थना कहीं पर लिखी नहीं पर आशय समझा जाता है ॥ ५ ॥

(शिक्षा) इस ऋचा में 'सद्' और 'जा' शब्द अपने अपने पूर्व शब्द से मिल के समास का पद बनता है पर शब्द भिन्न २ प्रकट कर दिये हैं इस हेतु से कि जो व्याकरण नहीं जानते उन को शब्द का ज्ञान हो।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

व्याख्या— इस ऋचा में साकार भाव से सब वर्णन सूर्य का जानना और निराकार पक्ष में परब्रह्म समझना । पांच ऋचा का उपस्थान समाप्त हुआ ।

मध्यान्ह का उपस्थान ।

ओं अथयएतस्मिन्मण्डले पुरुषोयश्चैष हिरण्मयः पुरुषोयएषएतस्मिन्मण्डलेपुरुषोयमेवसोयंदक्षिणेक्षन्पुरुषश्च शुक्रियं रुद्रस्य ॥१॥

अथ अब, यह अव्यय है प्रारम्भ में यह शब्द शुभार्थ है और द्योतक है **यः** जो **एतस्मिन्** इस **मण्डले** मण्डल में (वर्त्तमान) **पुरुषः** पुरुष **यः** जो **च** और **एष** यह **हिरण्मयः** सूर्य और अग्न्यादि रूप से जगत् को प्रकाशित करता है **पुरुषः** वह पुरुष **यः** जो **एष** यह **एतस्मिन्** इस **मण्डले** चौदह भुवन का आत्मक जो मण्डल है उस में **पुरुषः** पुरुष **अयम्** यह **एव** ही है **सः** वह **अयम्** जो **दक्षिणेन** दक्षिण मार्ग से **ईक्षन्** देखते हुये रात दिन चलता है **पुरुषः** पुरुष **च** और **शुक्रियंरुद्रस्य** ।

टीका--इस सूर्य मण्डल में जो पुरुष परमात्मा है वोही सूर्य्य अग्न्यादि रूप से जगत् को प्रकाशित करता है और वह अन्तर्यामी भाव से चौदह भुवनों में ऐसे ही रूपों से आप ही वर्त्तमान है और वही पुरुष सूर्य रूप से दक्षिणायन और उत्तरायण के मार्ग में रात दिन चलता है । सो आशय ये है कि मैं उस पुरुष की कांक्षा रखता हूं और शुद्ध मन से प्रार्थना करता हूं कि मेरी दैवी सम्पद् करे जैसे देवता सुख भोगते हैं उसी प्रकार से मैं भी भोगूं ॥ १ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मध्यान्ह उपस्थान की सरी ऋचा ।

ओं यउदगात्पुरस्तात् महतोअर्णवाद्विभ्राजमानः सरिरस्यमध्ये समावृषभोरोहिताक्षः सूर्य्योविपश्चिन्मनसा पुनातुयद्ब्रह्मावादिष्म तन्मामाहिंसीत्सूर्य्याय विभ्राजायवै नमोनमः ॥२॥

य जो **उदगात्** उदय हुआ **पुरस्तात्** पूर्व दिशा से **महतः** बड़े **अर्णवात्** समुद्र से **विभ्राजमानः** विशेष करके चमकने वाला है **सारिरस्य** चलने के मार्ग **मध्ये** बीच अन्तरिक्ष में **सः** वह **मा** मुझे **वृषभः** जो कामना बर्साता है **रोहिताक्षः** लाल आंखें उस की हैं सो वह **सूर्यः** सूर्य (जो) **विपश्चिन्** ज्ञानी (है) **मनसा** (विचार करके) वा मन से **पुनातु** शुद्ध करे अर्थात् दैवी सम्पद् योग्य मुझे करे **यत्** जो **ब्रह्म** वेद **आवादिष्म** मैंने पढ़ा **तत्** वह **मा** मुझे **माहिंसीत्** नष्ट न करे अर्थात् मुझ से आसुरी कर्म न होवे **सूर्य्याय** सूर्य **विभ्राजाय** विशेष चमकने वाले को **वै** जो निश्चय है **नमो नमः** बारम्बार नमस्कार है ॥ २ ॥

टीका—जो सूर्य पूर्व दिशा में उदय हुआ और महा समुद्र से निकला और जो विशेष करके प्रकाश करता है और अन्तरिक्ष के मार्ग में चलता है । जो कामना हमारी पूरी करता है । जिसकी लाल आंखें हैं उसकी हम चिन्ता करते हैं और यह प्राथना करते हैं कि हमारी दैवी सम्पद् होवे और जो हमने वेद पढ़ा है सो हमारा पढ़ना नष्ट न होवे अर्थात् आसुरी कर्म्म हम से न होवें सो ऐसे सूर्य को जो निश्चय प्रकाश करने वाला है मैं बारम्बार नमस्कार करता हूं । ये उपस्थान हाथों को उठा के करना । दैवी सम्पद् जो ऊपर कही है उस का व्योरा यह है । जो नीचे लिखते हैं ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१ अभयं डर न होवे. २ सत्त्वं चित्त शुद्ध और प्रसन्न रहे आत्मा के ज्ञान में मन रहे. ३ दानं अपने खाने की योग्य वस्तु किसी को देना. ४ दमः बाहर की इन्द्रियों को रोकना. ५ यज्ञः यथाधिकार दर्श और पूर्णमास यज्ञ करना. ६ स्वाध्यायः वेद पाठ जप. ७ तपः देव और ब्राह्मण और गुरु पण्डित की सेवा करना ब्रह्मचर्य्य रहना और हिंसा न करना. ८ आर्ज्जवं कोमल व्यवहार. ९ अहिंसा पराई पीड़ा न सहना वा न करना. १० सत्यं सच बोलना. ११ अक्रोधः जो कोई ताड़ना भी करे तो क्रोध न करना. १२ त्यागः दया और दान में दुविधा न करना. १३ शान्तिः चित्तकामना रहित रखना. १४ अपैशुनं पराये का दोष प्रकट न करना. १५ भूतेषुदया जो दीन प्राणी हो उसपर दया करना. १६ अलोलत्वम् चतुराई न करना. १७ मार्दवम् बहुत कोमलता. १८ ह्रीः लज्जा. १९ अचापलम् वृथा काम न करना. २० तेजः दृढ़ता. २१ क्षमा सामर्थ हो और क्रोध न करे. २२ धृतिः चित्त को स्थिर करना. २३ शौचं बाहर, भीतर अपना शुद्ध करना. २४ अद्रोहः मारने की इच्छा न करना. २५ अतिमानिता अपने मन में अभिमान न रखना ।

आसुरी संपद् ।

१ दंभः धर्म्म हीन पाखण्डी अभिमानी होना. २ दर्पः अपने धन और विद्या इत्यादि से गर्व्व करना । मोक्ष के लिये 'दैवी सम्पद्' और बन्धन के लिये "आसुरी सम्पद्" है ।

न्यास ।

ॐ अनाभौ उह्रदयेमशिरसि ॐ भूः पादयोः
ॐ भुवः जान्वोः ॐ स्वः गुह्ये ॐ महः नाभौ
ॐ जनः कंठ ॐ तपः ललाटे ॐ सत्यं शिर-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सि ओं भूः हृदयाय नमः ओं भुवः शिरसे स्वाहा ओं स्वः शिखायैवषट् ओं महः कवचा-यहुं ओं जनः नेत्राभ्यां वषट् ओं तपः सत्य-मस्त्रायफट् ओं भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः ओं भुवः तर्ज्जनीभ्यां नमः ओं स्वः मध्यमाभ्यां नमः ओं महः अनामिकाभ्यां नमः ओं जनः कनि-ष्ठिकाभ्यां नमः ओं तपः सत्यं करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः ओं तत्पादयोः। सवितुर्जान्वोः वरेण्यं कट्यां। भर्गो नाभौ देवस्य हृदये। धी-महि कंठे। धियो योनः मुखे। प्रचोदयाच्छि रासि। ओं तत्सवितुर्हृदयाय नमः। वरेण्यं शिरसे स्वाहा। भर्ग्गो देवस्य शिखायैवषट्। धीमहि कवचायहुं। धियोयोनः नेत्राभ्यां वौषट्। प्रचोदयादस्त्रायफट् ओं तत्सवितुरंगु-ष्ठाभ्यां नमः। वरेण्यं तर्ज्जनीभ्यां नमः। भर्ग्गो देवस्य मध्यमाभ्यां नमः। धीमहि अनामिकाभ्यां नमः। धियोयोनः कनिष्ठिका भ्यां नमः। प्रचोदयात्करतल करपृष्ठाभ्यांनमः ओं आपः हृदये। ज्योतिर्नेत्रयोः। रसोजिह्वाया ममृतं ललाटे। ब्रह्मभूर्भुवः स्वरों शिरसि॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

व्याख्या—न्यास में अंगों को छूना और पुष्टि की प्रार्थना करना चाहिये अंगों के नाम बहुत सुलभ हैं इस हेतु से टीका लिखने का प्रयोजन नहीं पाया। आगे गायत्री अक्षरों के न्यास का चक्र लिखते हैं जो वृद्ध याज्ञवल्क्य के अनुसार है इसका बड़ा महात्म है।

चक्र.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
तत्	स	वि	तु	र्व	रे	णि	अं	भ	र्गो	दे	व	स्य	धी	म	हि	धि	यो	यो	नः	प्र	चो	द	यात्
पादयोः	अंगुष्ठयोः	गुल्फयोः	जान्वोः	जंघयोः	ऊर्वोः	गुह्ये	लिंगे	पृष्ठे	स्कन्धयोः	नाभ्यां	कुक्षौ	स्तनयोः	कण्ठे	मुखे	तालुनि	नासिकाग्रे	नेत्रयोः	भ्रुवोर्मध्ये	ललाटे	पूर्वे वक्त्रे	दक्षिणे वक्त्रे	उत्तरे वक्त्रे	पश्चिमे वक्त्रे

निवेदन—किसी २ मति से 'अं' के स्थानमें 'यं' होता है।

दूसरे प्रकार से गायत्री अक्षरों का न्यास वृहत पराशर के अनुसार॥

ॐ १ तत्-कारंपादयोर्न्यस्य ब्रह्म विष्णु शिवाकृतिं। शान्तं पद्मासनारूढं ध्यानाद्दहति पातकम्॥

टीका—१ तत्कार से दोनों पैर छुवे और ब्रह्मा विष्णु शिव का ध्यान इस प्रकार से करे कि शान्त स्वरूप कमल के आसन पर विराजमान हैं ऐसे ध्यान से पातक भस्म हो जाता है।

२ स--कारंगुल्फयोः कुर्यादतसीपुष्पसन्निभं। पद्ममध्येस्थितंसौम्यं दहते चोपपातकम्॥

टी०—२ सकार पढ़ के दोनों पैर के गट्टे छुवे और अलसी फूल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के वर्ण ईश्वर का इस प्रकार से ध्यान करे कि कमल के फूल के बीच में सौम्य रूप से बैठ हैं ऐसे ध्यान से थोड़े पाप भस्म हो जाते हैं।

३ वि--कारंजंघयोर्दीप्तंध्यायेदग्निनिभंबुधः ।
अक्षसूत्रधरंदेवंविश्वव्यापिनमीश्वरम् ॥

टी०--३ विकार पढ़के जांघों को छुवे और ऐसे देव का ध्यान करे जिसका प्रकाश अग्नि के समान है और कमलाक्ष की माला धारण किये है और संसार में व्यापक है। ऐसे ईश्वर का पण्डित ध्यान करते हैं।

४ तु-कारं जानुदेशेतु इन्द्रनीलसमप्रभं ।
विश्वाधारंनिराकारं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥

टीका--४ तुकार पढ़के दोनों घुटने छुवे और ऐसे ईश्वर का ध्यान करे जिसकी प्रभा इन्द्रनील हीरा के समान है और जो संसार का आधार और निराकार है और सब प्रकार की सिद्धियां देता है।

५ (वं) ऊर्वो'वं'विमलं ध्यायेच्छुद्धस्फटिकसन्निभं ।
वरेण्यं वरदं देवं विश्वगं विश्वरूपिणम् ॥

टीका--५ ये पढ़के दोनों जांघों को छुवे और ऐसे देव का ध्यान करे जो विमल और शुद्ध है और श्रेष्ठ है और जिसका वर्ण स्फटिक मणि के समान है और उत्तम और वरदान देनेवाला विश्वव्यापी और विश्वरूप है। 'वं' अक्षर श्लोक के भीतर ही पढ़ा जावेगा।

६ रे-कारश्चापिवृषणो विद्युत्स्फुरिततेजसे ।
मित्रद्रोहकृतं पापं शोधयेद्यस्यचिंतनात् ॥

टीका--६ रेकार पढ़ के दोनों अण्डकोष छुवे और ऐसे देव का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ध्यान करे जो तेज में विराजमान चमकता है मित्र के साथ वैर करने से जो पाप हुआ हो वह इस ध्यान से दूर होजाता है ।

७ णिं-गुह्येश्वेतवर्णन्तु जातीपुष्पसमप्रभं ।
धारयेद्धारणायुक्तं पुमान्पुण्यफलप्रदम् ॥

टीका--७ णिंकार पढ़के गुह्य स्थान छुवे और ऐसे देव का ध्यान अच्छी युक्ति से करे जिसका वर्ण जाती (बड़ी चंबेली) पुष्प के समान है तो पुण्य और फल प्राप्त होता है ।

८ अं-कट्यांश्वेतवर्णाभं शशांककृतभूषणं ।
योगिनोवरदं देवं सर्वकामफलप्रदम् ॥

टीका--८ यह श्लोक पढ़के कटिठांव छुवे और श्वेत वर्ण देव का ध्यान करे जिसकी शोभा चन्द्रमा के समान है वह देव योगियों को वरदान देनेवाला और वह उसकी महिमा गाते हैं । वह ईश्वर सब प्रकार की कामना पूरी करता है ।

९ भ-कारं नाभिविवर्णं आकाशसदृशप्रभं ।
ध्यायेत्कमलगर्भस्थं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥

टीका--९ यह श्लोक पढ़के नाभि छुवे और कमल गर्भ देव का ध्यान करे जिसकी प्रभा आकाश के तुल्य है । वह देव भुक्ति मुक्ति सब फल का देनेवाला है ।

१० (र्गों)-जठरेभृंगवर्णंतु मात्राद्वयविभूषितं ।
"ग" कारं रेफसंयुक्तं भर्गरूपं भजेन्नरः ॥

टीका--१० यह पढ़के पेट छुवे और भृंगी वर्ण देव का ध्यान करे और भर्ग रूप को भजे 'र्गों' अक्षर मात्रा सहित श्लोक के भीतर ही

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आ गया पर श्लोक के आदि में भी यह अक्षर प्रकट कर दिया है इसी प्रकार और श्लोकों में भी किया है । यह बात विचार लेना चाहिये । श्लोक पढ़ २ के न्यास उत्तम होगा ।

११ (दे)-श्यामरक्तञ्च 'दे' कारं हृदि देयं निरामयं ।
देवदेवं ध्यानगम्यं महापातकनाशनम् ॥

टीका--११ श्याम और लालवर्ण देव का ध्यान करे और हृदय में न्यास करे वह देव निर्दोष है वह देवों का राजा है उसके ध्यान करने से महापातक नाश होता है ।

१२ (व)-कुन्देन्दुवर्णसदृशं 'व'कारं विश्वभावनं ।
उदरस्थं ध्यानगम्यं ऊर्ध्वलोकगतिप्रदम् ॥

टीका--१२ कुन्द फूल के वर्ण देवता का ध्यान करे और वकार अक्षर का स्मरण करके उदर में न्यास करे वह देव विश्व भावन हैं । उसके ध्यान से ऊपर के लोक के जाने की गति मिलती है ।

१३ स्य-कारं विन्यसेत्कंठे स्वच्छस्फटिकसन्निभं ।
योगीशः सर्वदाध्येयं यमपापविनाशनम् ॥

टीका--१३ स्यकार के स्मरण से कण्ठ छुवे और ऐसे देवता का ध्यान करे जिसका वर्ण शुद्धस्फटिक मणि के समान है । योगी लोग उसका ध्यान करने से यम पाप से छूटते हैं ।

१४ धी कारं वसुदैवत्यं वदनेस्वर्णसन्निभं ।
पद्मासनगतं ध्यायेद्धृदयग्रन्थिभेदनम् ॥

टीका--१४ यह श्लोक पढ़के मुँह छुवे और 'धी' कार के देवता वसुदेव का इस प्रकार से ध्यान करे कि उसका वर्ण सोने का सा है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

और कमल के आसन पर विराजमान है ऐसे ध्यान से हृदय की गांठ खुल जाती है और ज्ञान में प्रवृत्त होता है ।

१५ म—कारंपद्मनाभंतु शिरस्थंदीप्ततेजसं ।
सिंहासनगतंध्यायेन्मुक्तिःसन्मुखकारकम् ॥

टी० १५ (यह श्लोक पढ़के) शिर छुवे और "म" कार के देवता का ध्यान करे इस प्रकार से कि वह देवता कमल नाभ है और उसका तेज प्रकाश किये है और वह देवता सिंह के आसन पर विराजमान है ऐसे ध्यान से मुक्ति सन्मुख प्राप्त होती है ।

१६ हि—कारंनासिकाग्रेतु पूर्णचन्द्रसमप्रभं ।
जपंतंहंसहंसेति रंध्रयोरात्रिलंबितः ॥

टी० १६ (इस श्लोक से) नासिका की नोक छुवे और "हि" कार अक्षर का स्मरण करे और उसके देवता का ध्यान इस प्रकार से करे कि उसकी प्रभा पूर्ण चन्द्रमा की सी है और उसके दोनों नथनों से श्वास के साथ हंस हंस ऐसा जप हो रहा है ।

१७ धि—मातरमांगिरसं नेत्रयोर्विन्यसेद्बुधः ।
मनोवाक्कायजंपापं चिंतनात्तत्प्रणश्यति ॥

टी० १७ (ये श्लोक पढ़ते हुये) "धि" कार के स्मरण में दोनों आंखें छुवे और अग्नि के देवता का ध्यान करे तो मन वाणी और शरीर से जो पाप हुआ हो वह भस्म हो जावे ।

१८ यो--कारोदक्षिणेवक्त्रे मीनासनगतोध्रुवं ।
ध्यायेत्समाहितो नित्यमनिमेषजनप्रियं ॥

टी० १८ (यह श्लोक को पढ़ते हुये) "यो" कार के स्मरण में

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मुँह का दहना भाग छुवे और ऐसे देव का ध्यान करै जो मछली के आसन पर विराजमान है और वह देव देखनेवालें का प्रिय शुद्ध ध्यान से प्राप्त होने योग्य है ।

१९ यो—कारंतुद्वितियोवै ललाटेविन्यसेद्बुधः ।
कूर्म्माकारंध्यानगम्यं भवबन्धविनाशनम् ॥

टी० १९ दूसरे "यो" कार के स्मरण में (यह श्लोक पढ़ते हुये) ललाट को छुवे और कछुवे के आकार देव का ध्यान करे तो संसार के बन्धन से छूटे ।

२० न—कारस्तुमुखेपूर्व्वे द्वादशादित्यसन्निभः ।
सकृद्ध्यात्वाद्विजोयस्तु सगच्छेद्वैष्णवंपदम् ॥

टी० २० 'न' कार का स्मरण करके मुख के सामने छुवे और ऐसे देव का ध्यान करे जिसका प्रकाश द्वादश (१२) सूर्य्य के समान है एकही बार ध्यान से द्विज विष्णु पदवी को प्राप्त होता है ।

२१ प्र—कारंदक्षिणेवक्रे कालाग्निरुद्रसन्निभं ।
सकृद्ध्यात्वाद्विजश्रेष्ठः सगच्छेदैश्वरंपदम् ॥

टी० २१ "प्र" कार से मुख के दहने भाग को छुवे और ऐसे देव का ध्यान करे जिसका प्रकाश प्रलय काल के रुद्र के समान है और महाक्रान्त का सा है ऐसा ध्यान एक बार करने से महापाप नाश होता है ।

२२ चो—कारंपश्चिमेवक्रे मध्याह्नादित्यसन्निभं ।
महाक्रान्ताकृतिंध्यायेन्महापापप्रणाशनम् ॥

टी० २२ (श्लोक पढ़ते हुये) "चो" कार के स्मरण में सिर

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

के पीछे छुवे और इस अक्षर के देवता का ऐसा ध्यान करे जिसका प्रकाश मध्याह्न के सूर्य्य के समान है और आकार उस देवता का महाक्रान्त का है। ऐसे ध्यान से महापाप नाश होता है।

२३ द-कारमुत्तरेवक्त्रे शुक्लवर्णसमद्युतिः।
सूर्य्यमंडलसंवर्ती सूर्य्यलोकगतिप्रदः॥

टी० २३ "द" कार का स्मरण (श्लोक पढ़ते में करके) मुख के उत्तर छुवे और शुक्ल वर्ण सूर्य्य मण्डल में विराजमान देव का ध्यान करे ता सूर्य्य के लोक में पहुंचने की गति मिलती है।

२४ यात्-कारंन्यस्यशिरसि पद्मपत्रसमप्रभः।
ध्यायेत्प्रसन्नवदनं विष्णुलोकपदंनृणाम्॥

टी० २४ यात्कार का स्मरण (श्लोक पढ़ते में) करके शिर छुवे और ऐसे देव का ध्यान करे जिसकी वर्ण कमल की पंखडियों के समान है और प्रसन्न चेष्टा उसकी है। ऐसे ध्यान से मनुष्यों को विष्णु लोक प्राप्त होता है।

——:*:——

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गायत्री के अक्षरों का चक्र।

मुद्रा	वर्णानि	तत्त्वानि	शक्तयः	देवता	छन्दः	ऋषिः	गायत्रीके अक्षर	संख्या
सुरभि	चम्पक	पृथिवी	प्रह्लादिनी	अग्निः	गायत्री	प्रह्लादः	तत्	१
ज्ञान	अतसी	आपः	प्रभा	प्रजापतिः	त्रिष्टुप्	अत्रिः	स	२
चक्र	कुसुम्भ	तेजः	विश्वभद्रा	सोमः	जगती	वशिष्ठः	वि	३
योनि	अग्निप्रभा	वायुः	विश्वविलासिनी	ईशानः	अनुष्टुप्	शुक्रः	तु	४
कूर्म्म	शंख	आकाशः	प्रभा	आदित्यः	पंक्तिः	कण्वः	र्व	५
पंकज	नीलोत्पल	गंधः	शांता	बृहस्पतिः	महाबृहती	पराशरः	रे	६
लिंग	गोरोचन	रसः	तमी	मित्रः	उष्णिक्	विश्वामित्रः	णि	७
निर्वाण	इन्दु	रूपः	कांतिः	भगः	ककुप्	कपिलः	यं	८
सुरभि	चम्पक	स्पर्शः	सृष्टा	अर्यमा	गायत्री	शौनकः	भ	९
ज्ञान	अतसी	शब्दः	दुर्गा	सविता	त्रिष्टुप्	याज्ञवल्क्यः	र्गो	१०
चक्र	कुसुम्भ	वाक्	सरस्वती	त्वष्टा	जगती	भरद्वाजः	दे	११
योनि	अग्निप्रभा	पाणि	विश्वरूपा	पृथ्वी	अनुष्टुप्	यमदग्निः	व	१२

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गायत्री के अक्षरों का चक्र ।

कूर्म्म	शंख	पाद	विशालाक्षी	इन्द्राग्नी	पंक्तिः	गौतमः	स्य	१३
पंकज	नीलात्पल	पायुः	शालिनी	वायुः	महाबृहती	मुद्गलः	धी	१४
लिंग	गोरोचन	उपस्थः	व्यापिनी	वामदेवः	उष्णिक्	व्यासः	म	१५
निर्वाण	इन्दु	त्वक्	विमली	मैत्रावरुणा	ककुप्	लोमशः	हि	१६
सुरभि	चम्पक	चक्षुः	तमोपहारिणी	भ्रातृवः	गायत्री	अगस्त्यः	धि	१७
ज्ञान	अतसी	श्रोत्रं	सूक्ष्मा	विश्वदेवा	त्रिष्टुप्	कौशिकः	यो	१८
चक्र	कुसुंभ	जिह्वा	अवयवी	वामनः	जगती	वत्सः	यो	१९
योनि	अग्नि	प्राणः	हेम	विष्णुः	अनुष्टुप्	पुलस्त्यः	नः	२०
कूर्म्म	शंख	मनः	पद्मालया	रुद्रः	पंक्तिः	मंकणः	प्र	२१
पंकज	नीलोत्पल	बुद्धिः	वरदा	कुवेरः	महाबृहती	दुर्व्वासः	चो	२२
लिङ्ग	गोरोचन	अहंकारः	भद्ररूपा	अश्विनी	उष्णिक्	नारदः	द	२३
निर्वाण	इन्दु	चित्तः	सर्वतोमुखा	ब्रह्मा	ककुप्	कश्यपः	यात्	२४

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निवेदन ।

पूर्वोक्त ध्यान तान्त्रिक है अनेक प्रकार के ध्यानों से सन्देह मिथ्या ज्ञान का हो जाता है सो लिखनेवाले की मति से ध्यान इन प्रकार के वा और प्रकार के करना अच्छा नहीं क्योंकि ध्यान से चित्त में स्वरूप बन जाता है वह बुद्धिमान् मिथ्या समझते हैं कलियुग में ध्यान योग्य नहीं जप की सिद्धी उत्तम है और ध्यान तो सोंच है जिससे सिर में विकार होने का सन्देह रहता है इस बात का प्रमाण कि ध्यान से मिथ्या ज्ञान होता है इसी सन्ध्या के मन्त्रों से प्रकट है क्योंकि किसी मन्त्र में कोई ध्यान किसी प्रकार की मूर्ति का नहीं है और गायत्री में श्रेष्ठ ज्ञान तेज का स्मरण है और जप इसका मोक्ष का कारण जैसा गायत्री व्याख्या में लिखा है ।

१-ॐ तत्समायनमः टी० दोनों हाथ जोड़े। २ स-सम्पुटायनमः टी० हाथ पोले जोड़े मानो हाथों में फूल भरे हैं । ३ वि-विततायनमः टी० दोनों हथेली की गद्दी से गद्दी मिलावे, हाथ खुले रहें हथेली तनी रहें, अंगुली मिली रहें। ४-तुर्विस्तीर्णायनमः टी० तीसरे जोड़ को बीता भर हटाले मानो किसी वस्तु को थांबना हो और सब आकार तीसरी मुद्रा का बना रहे ।। ५ व-द्विमुखायनमः टी० हाथ जोड़ने की चिन्ता करके पहले दोनों कनिष्ठिका की नोक से नोक जोड़े ६ रे-त्रिमुखायनमः टी० पांचवीं मुद्रा में अनामिका की नोक दूसरी अनामिका की नोक से जोड़े । ७ णि-चतुर्मुखायनमः टी० छठी मुद्रा में मध्यमा की नोक से दूसरी मध्यमा की नोक जोड़े ८ यं-पञ्चमुखायनमः टी० सप्तमी मुद्रा में एक तर्जनी की नाक से दूसरी तर्जनी की नोक जोड़े ९ भ-षण्मुखायनमः टी० आठवीं मुद्रा में अंगुष्ठ की नोक दूसरे अंगुष्ठ की नोक से जोड़े । १० र्गो-अधोमुखायनमः टी० दोनों हथेलियां औंधी झुकावे मानो कोई वस्तु ढापें अंगुष्ठ से अंगुष्ठ

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

छुवा रहे । ११ दे—व्यापकांजल्यैनमः टी० दशवीं मुद्रा को पलट के अंजुली बनावे । १२ व—शकटायनमः टी० दोनों तर्ज्जनी से एक एक हाथ के अंगुष्ठ इस प्रकार से छुवे कि गोल २ आकार पहिये का बने बायां हाथ नीचे दहना ऊपर तले ऊपर रक्खे और अंगुलियां क्रम से एक पर एक रहें गाड़ी का आकार बनेगा । १३ स्य—यम-पाशायनमः टी० द्वादश मुद्रा में केवल तर्ज्जनियोंका जोड़ छांड़दे । दूसरी रीति—बायां हाथ औंधा दहना सीधा । दोनों मध्यमा अना-मिका दूसरे हाथ के अंगूठे से पकड़े और तर्ज्जनी दूसरे हाथ की कनिष्ठिका से पकड़े । १४ धी—ग्रंथिकायनमः टी० तर्ज्जनी से त-र्ज्जनी लड़ावे पर मुट्ठी बंधी रहे बांई मुट्ठी नीचे सीधी दहनी ऊपर को औंधी रहेगी तर्ज्जनी की दूसरी २ पोर लड़ेगी । १५ म—सन्मुखोन्मु खायनमः टी० दोनों हाथों की अंगुलियां समेट के एक दूसरे हाथ की अंगुलियों से छुवाये । १६ हि—विलम्बायनमः टी० पन्द्रहीं मुद्रा में हाथ बीता भर हटाले । १७ धि—मुष्टिकायनमः टी० बायें हाथ की मुट्ठी पर दहनी मुट्ठी रक्खे । १८ यो—मीनायनमः टी० बायें हाथ पर दहना हाथ जमावे दोनों औंधे तले ऊपर रहें और अंगुली पर अंगुली जमावे । दोनों अंगुष्ठ इस युक्ति से अलग रहेंगे मछली का आकार बनेगा अंगूठों को हिलाता जावे । १९ यो—कूर्म्मायनमः टी० अठारवीं मुद्रा के आकार में दोनों मध्यमा और अनामिका जो एक पर एक जमी होंगी उनको झुकादे और कनिष्ठिका और तर्ज्जनी तनी रहेंगी बाईं तर्ज्जनी पर दहनी कनिष्ठिका और बाईं कनिष्ठिका पर दहनी तर्ज्जनी होगी । अंगूठे झुके रहेंगे हिलाये न जावेंगे इस युक्ति से कछुवे का आकार हो जावेगा । २० न—वराहायनमः टी० उन्नीसवीं मुद्रा में दोनों मध्यमा अनामिका एक पर एक जमी और तनी रहें । सूकर का आकार जिस युक्ति से होवे वह बनाना उचित है । २१ प्र—सिं-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

हाक्रान्तायनमः टी० उलटा पंजा गांठ के हाथ जोड़े और कतरनी के प्रकार से बायें अंगुष्ठ पर दहना अंगुष्ठ रक्खे तो सिंह का आकार बनेगा। २२ चो-महाक्रान्तायनमः टी० बायां अंगुष्ठ दहनी कनिष्ठिका की नोक से छुवाये। अंगुष्ठ की भी नोक छुवे। पंजे खुल रहेंगे बायां औंधा दहना सीधा रहेगा मानो उलटे सीधे बीते नापते हैं, इसकी और भी रीति देखने में आती है। २३ द-मुद्गरायनमः टी०-दहने हाथ की मुट्ठी बांध के बायें के बायें हाथ से दहनी कोहनी थांभे। दहना हाथ जहां तक पहुंच सके कांधे की ओर झुकावे कलमकी कली बने। २४ यात पल्लवायनमः टी० तेइसवीं मुद्रा में मुट्ठी खोल देवे पंजा फैला दे तो खिला हुआ कमल बनेगा।

व्याख्या-जो मुद्रा कठिन पाये गये उनका स्वरूप भी आगे मिलेगा। मुद्रा एक प्रकारकी उपासना तन्त्र के अनुसार है। वेद का इसमें कोई प्रमाण नहीं है। वेदोक्त संध्या में इसकी आवश्यकता नहीं इसके चिन्ह पद के स्थान पर हैं और यह भी चिन्ह के द्वारा एक प्रकार की बोली है।

२३, २४, मुद्रा छोड़े जितने आकार बनाये हैं वह उतने ही दृश्यमान हैं जितने बनाने वाले को अपनी ही अलग देख पड़ते हैं इसको बुद्धिमान विचार लेंगे तो मुद्रा बनाना सुलभ होगा। २३, २४ मुद्रा दूसरे पुरुष के अंग में दिखाई हैं। एक एक मुद्रा की कहीं २ अनेक रीति मिलेगी जिस प्रकार से अच्छा आकार जान पड़े उसको मानना चाहिये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दहनी खुली हथेली
अङ्गुली के नाम जानना चाहिये

यहां जोड को एक चीता खोले तो चौथी मुद्रा बने

(२) तीसरी मुद्रा गायत्री की

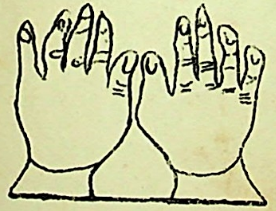

२०. मुद्रा
(औंधे हाथ)

२२ मुद्रा गड्डी का आकार

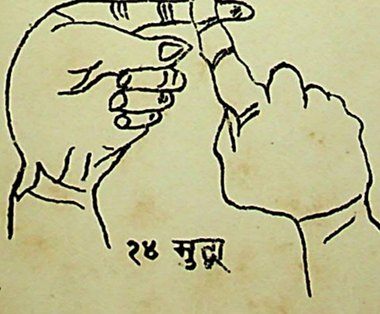

२४ मुद्रा

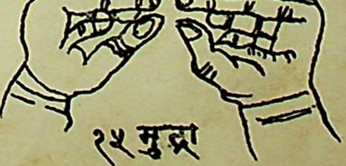

२५ मुद्रा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

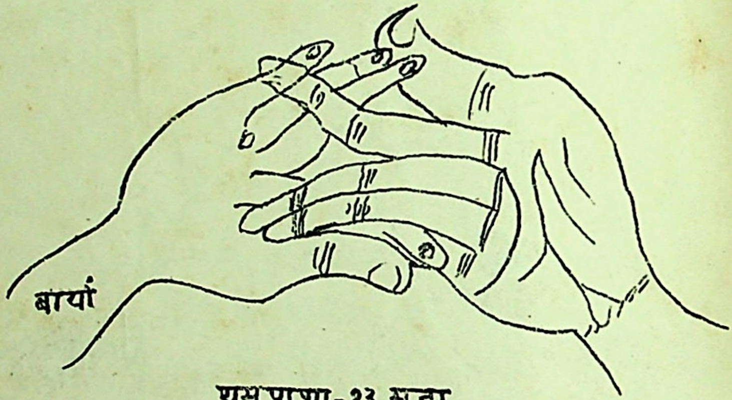

यम पाशा-२३ मुद्रा
इस प्रकार अंगुलियां
गांठे कि बीच का छेद
गोल दीखे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१७ मुद्रा

मुट्ठी पर
मुट्ठी है

१८ मुद्रा

बायें हाथकी पीठ पर दहनी
हथेली है अंगुष्ठ हिलतेजावें
मछली के समान

१९ मुद्रा
ककुना

२० मुद्रा
सूकर

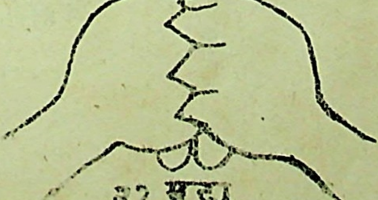

२१ मुद्रा

२२ मुद्रा

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

२३ मुद्रा

२४ मुद्रा

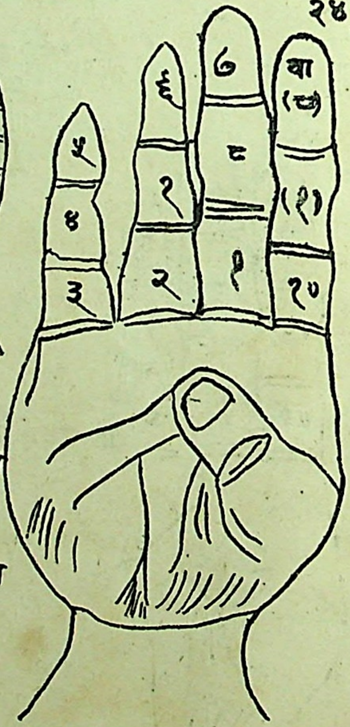

अंगुली सूर्यको सार्घ्य देने
की अंगूठे बाहर होने से
जलरुधिरकें तुल्य होजाता
है

हाथ में
जप की
रीत की
मुद्रा ॥
किसी
मति से
मध्यमा
की दो
पोरें छोड़ना
चाहिये।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

इसकी व्याख्या पृष्ठ ६५ में देखो

७ मुद्रा लिङ्ग।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

९ मुद्रा (निर्वाण)
व्याख्या पृष्ठ ६६
में देखो।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गायत्री के जप से पीछे आठ मुद्रा बनाना।

१ [सुरभि] गऊ के थनों का आकार बनावे पहले पंजा गांठे फिर पहले दोनों कनिष्ठिकाओं को दोनों अनामिकाओं से मिलावे और दोनों तर्जनियों को दोनों मध्यमा से मिलावे।

२ [ज्ञान] अपने दोनों स्तन दोनों हाथों से अंगुलियां समेट के छुवे बायें हाथ से बायां स्तन दहने से दहना।

३ [चक्र] दहने हाथ की अंगुलियों से छाती के बीच में छुवे।

४ [योनि] भग का आकार दोनों तर्जनियों की नोंकें मिलावे फिर अनामिका की मध्य गांठ पर बाईं अनामिका की मध्य गांठ उलटी तिर्छी रक्खे उसके आगे दोनों मध्यमा की नोंकें मिलावे उसके सामने दोनों कनिष्ठिका परस्पर मिलावे और उनकी जड़ें अंगूठों से छुवे।

५ [कूर्म] कछुवे का आकार जैसी १९ मुद्रा है।

६ [पंकज] कमल के फूल का आकार बायें हाथ पर दहना हाथ अंगुलियां खोलके रक्खे आकाश की ओर उठावे।

७ [लिङ्ग] लिङ्ग का आकार बनावे दोनों तर्जनियों की नोंके आपुस में मिलावे पर एक एक तर्जनी अपने अपने अंगूठे से मिली रहे। दोनों मध्यमा अनामिका एक दूसरी की पीठ से पीठ मिला के ऊपर को खड़ा और दोनों कनिष्ठिका आपुस में गांठ तो जलहरी और शिव लिङ्ग बनेगा।

८ [निर्वाण] मोक्ष की मुद्रा हाथों की पीठ से पीठ मिलाके पंजा गांठे इस प्रकार से कि एक अंगुली की नोक दूसरी नोक से छुवी रहे तब नीचे से पलट के ऊपर को उठावे और दोनों तर्जनियों को पेट से पेट मिलाके ऊपर को खड़ा कर अंगूठे तले ऊपर रक्खे बायां नीचे दहना ऊपर।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शिव संकल्प।

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैतिदैवं तदुसुप्तस्य तथैवैति दूरंगमंज्योतिषां ज्योतिरेकंतन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥ १ ॥

यत् जो (मन) **जाग्रतः** जगानेवाले का अर्थात् जागते में, **दूरम्** दूर **उदैति उत एति** चलाजाता है, **दैवम्** जीवात्मा का ग्रहण करने वाला और चमकने वाला है, **तत्** वह उ वितर्क (इसका आशय इन्द्रियों की सहायता से मन) **सुप्तस्य** सोनेवाले पुरुष का **तथाएव** मिलके **तथैव** उसी प्रकार से एति जाता है **दूरम्** दूर **गमम्** जानेवाला **ज्योतिषां** प्रकाशित इन्द्रियों का मन **ज्योतिः** ज्योति **एकम्** एकही है **तत्** वह **मे** मेरा **मनः** मन **शिव** शान्त **सङ्कल्पम्** सङ्कल्प **अस्तु** होवे।

टीका और व्याख्या—जो मन जागते में बहुत दूर जा सक्ता है अर्थात् नेत्रादि इन्द्रियों की इच्छा और पहुँच से बहुत दूर चला जाता है, जो मन देव है जीवात्मा को ग्रहण कर सक्ता है वा देख सक्ता है, दूसरा अर्थ देव का जो प्रकाश करता है और ज्ञानमात्र होजाता है, और सोते में भी उसी प्रकार से मन दूर चला जाता है, जो मन कर्णादि प्रकाशित इन्द्रियों का केवल एकही प्रकाश करनेवाला है, मन ही के कारण सब इन्द्रियां अपना अपना काम करती हैं उसी से जीवात्मा मिला है, सो ईश्वर से यह प्रार्थना है कि यह मेरा मन शान्त संकल्प होवे अर्थात् मेरा मन कामना रहित होवे कल्याण करनेवाला सर्वदा धर्म ही में लगे पाप में कभी न लगे ॥ १ ॥

ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्ष-मन्तः प्रजानाम् तन्मे मनः ॥ २ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

येन जिसके द्वारा **कर्माणि** कर्म **अपसः** निष्पापी **मनीषिणः** पण्डित लोग **यज्ञे** यज्ञ में **कृण्वन्ति** करते हैं **विदथेषु** और यज्ञ साधन में वह पण्डित **धीराः** बुद्धिमान् हैं **यद्** जो **अपूर्वं** सब इन्द्रियों से पहले हुआ **यक्षम्** और पूजा के योग्य है, **अन्तः** और शरीर के भीतर की इन्द्रिय है **प्रजानां** मनुष्यों की ।

टीका-जो पण्डित निष्पाप हैं और मानसी यज्ञ में कर्म करते हैं और यज्ञ साधन के ज्ञान में बुद्धिमान् हैं सो मनही के द्वारा कर्म करते हैं सो मन अपूर्व है अर्थात् सब इन्द्रियों से पहले हुआ और पूज्य है और जो शरीर में इन्द्रियां हैं उन में उनसे अलग भीतर की इन्द्री मन ही है सो मेरा ऐसा मन शिवसङ्कल्प होवे ॥ २ ॥

ओं यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्चयज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु । यस्मान् ऋते किञ्चन कर्मक्रियते । तन्मे ॥ ३ ॥

यत् जो (मन) **प्रज्ञानम्** उत्तम ज्ञान का कारण **उत** और भी **चेतः** चैतन्य करनेवाला जाननेवाला है **धृतिः** धीरज वा दृढ़ रूप है **च** और **यत्** जो (मन) **ज्योतिः** ज्योति अर्थात् प्रकाश करता है **अन्तः** अन्तःकरण में मनुष्यों के **अमृतं** और अमर है **प्रजासु** मनुष्यों के बीच (अन्तः के साथ अर्थ इसका हो गया) **यस्मात्** जिसके **न** नहीं (क्रियते में यह मिलता है) **ऋते** विना **किञ्चन** कोई **कर्म** काम **क्रियते** लोग नहीं करते ॥ ३ ॥

ओं येनेदं भूतं भवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वं । येन यज्ञस्तायते सप्त होता । तन्मे ४॥

येन जिस से **इदं** यह **भूतं** बीते हुए काम की वस्तु **भवनं**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वर्तमान काल की वस्तु **भविष्यत्** होनेवाली वस्तु **परिगृहीतं** ग्रहण होती है अर्थात् जानी जाती है **अमृतेन** सो उसी मन के अमर धर्म से **सर्वं** सब पुर्वोक्त वस्तु ज्ञान पड़ती है **येन** जिसके द्वारा **यज्ञः** यज्ञ **तायते** करते हैं **सप्त होता** जो यज्ञ अपने संबन्धी सात देवता का आवाहन करता है अर्थात् सात प्रकार के देवता का उस में आवाहन होता है ॥ ४ ॥

व्याख्या० जिस मन के द्वारा तीनों काल भूत भविष्यत् वर्तमान की बातें और वस्तु जानी जाती हैं सो कारण यह है कि मन मोक्ष पर्यन्त अमर रहता है । उसी मन से अग्निष्टोमादि यज्ञ किया जाता है जिस में सात देवता का आवाहन होता है सो ऐसा मन शिवसंकल्प होवे ।

ओं यस्मिन्नृचः सामयजूंषियस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः । यस्मिंश्चित्तंसर्वमोतं प्रजा नाम् । तन्मे ॥ ५ ॥

यस्मिन् जिस में **ऋचः** ऋग्वेद मन्त्र **साम** साम के मन्त्र (साम का समास यजूंषि के साथ होने से बहुवचन) **यजूंषि** यजुर्वेद के मन्त्र **यस्मिन्** जिसमें **प्रतिष्ठिताः** बने रहते हैं **रथ-नाभौ** रथ के पहिये की नाभ में **इव** जैसे **आराः** आरागज जड़े रहते हैं **यस्मिन्** जिस मन में **चित्तम्** सब पदार्थों का ज्ञान **सर्वं** और सब इन्द्रियों का धर्म **ओतं** पिरोया मिला रहता है अर्थात् मन के बस वह हैं **प्रजानाम्** मनुष्यों के मन में सब वस्तु का ज्ञान रहता है ॥ ५ ॥

टीका-जिस मन में ऋक् साम यजुर्वेदों के मंत्र बने रहते हैं अर्थात् मन में मंत्रों का स्मरण रहता है जैसे रथ के पहिये की नाभि में आरागज जड़े रहते हैं । जिन मनुष्यों के मन में सब पदार्थों का

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ज्ञान और सारी इन्द्रियों का धर्म गूंधा और मिला रहता है। सो परमेश्वर की कृपा से शिवसंकल्प होवे। गूंधा और मिला कहने का आशय यह है कि सब इन्द्रियां मन ही के बस में रहके अपना काम करती हैं।

ओं सुसारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान् नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं। तन्मे ॥ ६ ॥

सु अच्छा **सारथिः** रथ हांकने वाला **अश्वान्** घोड़ों को (नेनीयत क्रिया यहां लगी) **इव** जिस प्रकार से **यत्** जो (मनही) **मनुष्यान्** मनुष्यों को (चलाता है) नेनीयते हांकता है **अभी-शुभिः** बागों की डोरियां पकड़ के **वाजिनः** वेगशाली घोड़ों का **इव** भी (जैसे कोड़े से चलाते हैं उसी प्रकार से मन मनुष्यों को काम में चलाता है मनुष्यान् का अर्थ यहां पर आता है) **हृत-प्रतिष्ठं** जो हृदय में बैठा रहता है **यत्** जो (मन) **अजिरं** बूढ़ा नहीं होता (है) **जविष्ठं** और वेगवान् (है) तन्मे ॥ ६ ॥

टीका--जैसे अच्छा रथ हांकने वाला घोड़ों को बागों की डोरियों से हांकता है वा जैसे वेगशाली घोड़ों को थांम के कोड़े से चलाते हैं उसी प्रकार से मन मनुष्यों को सब प्राणियों को चलाता है हृदय में मन स्थित है बूढ़ा नहीं होता और बेगवान है। सो ऐसा मन मेरा शिवसंकल्प होवे।

शिक्षा।

यह छः (६) ऋचा गायत्री जप से पहले पढ़े और इनके अर्थ ज्ञान से मन को शुद्ध करे और मन शुद्धि की ईश्वर से प्रार्थना करे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तब ओजोसि ऋचा से ध्यान गायत्री का करे । तब विनियोग जप का करे ।

विनियोग ।

ॐ विश्वामित्र ऋषिः छन्दो गायत्रिं सविता तथा देवतोपनये जप्ये गायत्र्या योग उच्यते ॥

जप विधि ।

उत्तम जप रुद्राक्ष माला पर होता है । पर जो १० बार करना हो तो अंगुली पर करे । अनामिका की दूसरी पोर से गिने तब कनिष्ठिका की जड़ से गिनता हुआ क्रम से तर्जनी की मूल तक १० पूरे होंगे । चक्र भी इसका आगे लिखेंगे ।

माला पर फल इस प्रकार से लिखा है ।

अंगुली से १०० गुना सोने, हाथीदांत, मोती आदि मणिकी माला पर
(विशेषता धनी और राजा को जानना)

उससे १०००	,,	इन्द्राक्ष की माला पर		
,, १००००	,,	रुद्राक्ष	,, ,,	,,
,, लक्ष	,,	कमलगट्टाकी	,,	,,
,, अनन्त	,,	पताजियाकी	,,	,,

रुद्राक्ष सबको विशेष है । कमलगट्टा पताजिया निर्धनी को। चांदी की माला भी सब को योग्य है ।

जप क्रिया ।

गायत्री का जपने वाला स्वर्ग को जाता है । शान्त होने को उत्तर मुख मानसी जप करे जीभ होंठ शिर ग्रींच न हिलावे । दन्त न दिखलावे ॥ १ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पुष्टि हेतु पूर्व मुख धीरे जपे, पास का मनुष्य न सुन सके॥ २॥

प्रयोग में दक्षिण मुख शब्द उच्चारण करे ॥ ३ ॥

विधि यज्ञ से जप यज्ञ १० गुना अच्छा है। अ० २ श्लो० ८५ मनुः॥

,,	धीरा	} १००	,,	,,	,,	,,
,,	उपांशु					
,,	मानसी	१०००	,,	,,	,,	,,

[शिक्षा १] सब प्रकार के जप में कोई अंग न हिलावे। इन्द्रियों को एकाग्र करे और स्वर सुर वर्ण अक्षर और पद और शब्द सुन्दर शुद्ध पढ़े वा मानसी में इन बातों का स्मरण रक्खे।

[शिक्षा २] जो खड़े जपे तो सूर्य्य को देखता रहे। बैठे तो पूर्व मुख जपे। सायंकाल में तो सूर्य अस्त होने पर पश्चिम मुख जपे।

[शिक्षा ३] जप गुप्त रीति से होगा और दहना हाथ हृदय के समीप रहे।

१०	बार जपे	तो	इसी जन्म का पाप छूटता है।					
१००	बार	,,	,,	पूर्व	,,	,,	,,	,,
१०००	बार	,,	,,	तीन युग	,,	,,	,,	

[शिक्षा ४] १०० बार में गृहस्थ और ब्रह्मचारी के लिये १०८ का प्रमाण जानना गायत्री को जप में त्रिपदा जानना। अर्चन न्यास, मन्त्र, अग्नि कार्य में चतुष्पदा जानना, और सब ठौर अर्चन यज्ञोपवीत आदि में त्रिपदा।

विशेष जप। जो एक मास तक घर से बाहर नित्य १००० बार जप करे तो बड़े पाप से छूट जाता है जैसे सर्प केंचल से छूटता है। मनुः अ० २ श्लो० ७९।

गायत्री सर्वोत्कृष्ट मन्त्र है इस के यथार्थ जानने से फल विशेष

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

होता है । जिन मनुष्यों के लिये गर्भाधान से लेके मरण पर्यन्त संस्कार के मन्त्र कहे हैं उन ही को इस गायत्री का अधिकार है और को नहीं । जो ऐसा मनुष्य तीन वर्ष तक निरालस्य गायत्री का जप करे तो वायु और आकाश रूप होके ब्रह्म पदवी पाता है वा मोक्ष को प्राप्त होता है अध्याय २ श्लोक ८१, ८२ मनुः । नित्य संख्या १००० ।

गायत्री के आदि और अन्त में प्रणव अवश्य लगाना चाहिये नहीं तो जप निःफल होगा वन में जल के समीप नित्य केवल गायत्री को पढ़े तो भी फल विशेष है । अ० २ श्लोक १०४ मनुः । ओं भूः भुवः स्वः और गायत्री के तीनों चरण दोनों संध्या में जपे तो सम्पूर्ण पुण्य से युक्त होवे । अध्याय २ श्लोक ७८ मनुः ।

गायत्री ।

ओम्भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्य ।
धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ओम् ॥

तत् (हे) उस (वेदों में प्रसिद्ध) **सवितुः** सूर्यमण्डल में वर्त्तमान वा जगत रचनेवाले के **वरेण्यम्** श्रेष्ठ (यह भर्ग का विशेषण है) **भर्गः** तेज अर्थात् अन्तर्यामी चैतन्य निर्गुण ज्ञान स्वरूप परमेश्वर का जिसके स्वप्रकाश की सत्ता से सूर्यादि तेज वर्तमान हैं **देवस्य** जो (सविता) सब को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है । यह सविता का विशेषण है **धीमहि** ध्यान करते हैं **धियः** बुद्धि और कर्म इन्द्रियों की वृति **यः** जो भर्ग **नः** हमारी को **प्रचोदयात्** अच्छे प्रकार से तत्त्व जानने में चलावे वा अपने २ कार्य में लगावे वा चैतन्य करता है ।

टीका—हम उस भर्ग का ध्यान करते हैं जो तेजस्वरूप है और

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चैतन्य है । अन्नादि को सूर्य्यरूप से पकाता है और प्रजा का पालनेवाला है जिसका प्रकाश सूर्य्य के मण्डल में है यह सविता का अर्थ है। स्मृति के प्रमाण से सावितृ मण्डल ही में उस परमात्मा का ध्यान होता है ।

स्मृतिः ध्येयःसदा सवितृमण्डल मध्यवर्ती ।

सविता का दूसरा अर्थ सृष्टि रचनेवाला वह भर्ग श्रेष्ठ है । "देव" सविता का विशेषण है अर्थ देव, का सुर नर पशु पक्षी कीड़ा में प्रकाशमान है चमकनेवाला, क्रीड़ा करनेवाला ज्ञान स्वभाव है सो ऐसा भर्ग ईश्वर हमारी बुद्धि और ज्ञान इन्द्रियों को चैतन्य रखता है अर्थात् सब इन्द्रियां उसी ईश्वर के प्रभाव से अपना काम करती हैं। याज्ञवल्क्यः हम भर्ग की चिन्ता करते हैं वह हमारी बुद्धि की वृत्ति को धर्म अर्थ काम मोक्ष में प्रवृत्त करे। प्रणव और महा व्याहृति के अर्थ पहले ही लिख चुके हैं वे सब भर्ग के विशेषण हैं अनेक प्रकार की शक्ति से ईश्वर के अनेक नाम हैं। भर्ग का अर्थ अनन्त स्वप्रकाश तेज जानना जिसकी सत्ता से सूर्यादि तेज सब चमकते हैं इस तेज का अनुमान सम्भव नहीं । जो कदाचित् सहस्र सूर्य एक समय उदय होके प्रकाश करें तो भर्ग तेज का अनुमान उनके समान हो । ये तेज ज्ञान का प्रकाश सच्चिदानन्द का है जो तमस से परे अनुमान करने योग्य है ।

विसर्जन जप निवेदन ।

**उँ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित ।
मनसस्यत इदं देव यज्ञं स्वाहा वाचे स्वाहा वा ते धाः ॥**

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

देवा हे देवों (सांख्य जाननेवालो एक एक अक्षर के तत्त्व के प्रकाश करनेवालो) गातुविदः गमन के जाननेवालो वा जानेवालो गातुम् जप यज्ञ जो हमने किया वित्वा (उसको तुम) जान के और ग्रहण करके मानो साखी बन के गातुमित (अपने २ स्थानों को) जावो मनसस्पत हे अन्तर्यामी परमात्मा इदम् यह देव-यज्ञम् जप यज्ञ स्वाहा सुहुत अर्थात् परिपूर्ण होवे वाचे वचन के स्थान में स्वाहा सुकृत होवे वा यह शब्द "धाः" में मिलता है पाद पूरा करने को है ते तुझे धाः धारण होवे वा पहुँचे और तू प्रसन्न होवे।

व्याख्या—हे देवो सांख्य प्रत्यक्षर के जाननेवालो तुम हमारे जप यज्ञ करने को जान के और साखी होके अपने अपने स्थानों को जावो जब तक फिर और दूसरा जप यज्ञ और देव यजन होवे तब तक जावो। हे मनसस्पत अन्तर्यामी परमेश्वर यह जो जप यज्ञ मैंने किया है सो आप की कृपा से परिपूर्ण होवे आपही के प्रीत्यर्थ रहे। (यज्ञ में वेदी अग्नि का काम है जिस में आहुत पड़े और स्वाहा कहा जावे) सो हे जातवेद ईश्वर यह जप यज्ञ मेरी वाणी वचन के स्थान में स्वाहा सुहुत होवे अर्थात् परिपूरन होके तेरे ही निमित्त धारण होवे अर्थात् तेरे अर्पण होवे। आशय यह है कि मेरी यह ही प्रार्थना है कि परमात्मा प्रसन्न होवे। ते वाधाः जो मन्त्र में कहा है सो इस में "वा" पाद पूरन करने को है इस मन्त्र से देव तर्पण करना चाहिये। आगे देवताओं को नमस्कार के मन्त्र लिखेंगे। खड़े होके एक एक दिशा और उसके देवताओं को उसी दिशा के सन्मुख होके हाथ जोड़े।

नमस्कार देवताओं को।

ओं नमः प्राच्ये दिशेयाश्चदेवता।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

एतस्यां प्राति वसन्त्येताभ्यश्च नमो॥ १॥

टीका–पूर्व दिशा को और जो देवता उसमें बसते हैं उनको नमस्कार है ॥ १ ॥ इसी प्रकार से सब दिशों और देवताओं को नमस्कार आगे भी जानना।

ॐ नमोऽवान्तरायै दिशे०। टी० पूर्व दक्षिण के कोने को। ॐनमः दक्षिणायै दिशे०। टी० दक्षिण दिशा को। ॐ नमोऽवान्त-रायै दिशे०। टी० दक्षिण पश्चिम के कोने को। ॐ नमः प्रतीच्यै दिशे०। टी० पश्चिम दिशा को। ॐ नमोऽवान्तरायै दिशे०। टी० पश्चिम उत्तरके कोने की दिशा को। ॐ नम उदीच्यै दिशे०। टी० उत्तर दिशा को। ॐ नमोऽवान्तरायै दिशे०। टी० उत्तर पूर्व के कोने की दिशा को। ॐ नम ऊर्ध्वायै दिशे०। टी० ऊपर की दिशा को। ॐ नमोऽधरायै दिशे०। टी० नीचे की दिशा को

ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः। नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते करोमि ओम्॥

गायत्री विसर्जन।

ओम् उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वत मूर्द्धनि।
ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवियथा सुखं॥
ॐ शान्तिः ३॥ ओम् तत् सत्॥

टीका--सुमेरु पर्वत जो भूमि पर है उसकी उत्तम शिखर चोटी पर गायत्री देवी विराजमान रहती है सो ब्राह्मणों की निवेदन पूर्वक आज्ञा को स्वीकार करनेवाली है। हे देवि आप सुख पूर्वक अपने

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्थान को जावें। अब आगे ऋग्वेद का पुरुष सूक्त लिखते हैं यह भी सन्ध्या का एक अंग है ऋग्वेद के पाठ के अनुसार यहां पाठ लिखा है और पुस्तकों में पाठ भेद है एक तो सप्तमी ऋचा और जगह पन्द्रहवीं पड़ती है दूसरे दो ऋचा अधिक भी हैं। १६ वेदाहमेतं पुरुषं० इत्यादि। १७ धाता पुरस्ताद्यमुदाजहार इत्यादि। सो यह दोनों ऋग्वेद के पाठ में नहीं हैं। देखो ३ प्रपाठक १२ अनुवाक तैत्तिरीय आरण्यक। ऋचोंका यथार्थ विचारने से प्रकट है कि सप्तमी ऋचा यज्ञ साधन प्रकरण के अच्छे क्रम में है १३ ऋचा से सृष्टि कल्पना का वर्णन है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

तृतीय काण्ड ।

पुरुष सूक्त ।

मू० ओं सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र पात् । स भूमिं विश्वतो वृत्वा अत्यतिष्ठद्द शांगुलम् ॥ १ ॥

टीका—सहस्रों अर्थात् अनन्त जिसके शिर हैं वह "सहस्रशिर्षि" का अर्थ है । शिर कहने से सम्पूर्ण अङ्ग समझे जाते हैं । वा जिसके गर्भ में अनन्त शिर हैं वा जो अन्तर्यामी भाव से सब शरीरों में है यह भी अर्थ "सहस्रशीर्षा" का समझा जाता है । पुरि अर्थात् शरीर में जो शयन करता है अर्थात् रहता है वह पुरुष परमात्मा है । और सहस्रों आंखें अर्थात् सब ज्ञान की इन्द्रियां वह ही परमात्मा है यह "सहस्राक्षः" का अर्थ है । सहस्रों जिसके पैर हैं अर्थात् वह ईश्वर सब कर्म की इन्द्रिय है सारांश अर्थ व्यापकत्व का इस से निकलता है । "याज्ञवल्क्य जी" लिखते हैं । "स" वह स्वयंभू परमेश्वर "भू" भूत भौतिक ब्रह्माण्ड लोक रूप "सर्वतः" सब जगह टेढ़ा ऊपर नीचे भीतर बाहर "वृत्वा" व्याप्य "अत्यतिष्ठद्दशांगुलम्" दशांगुल हृदय को कहते हैं और अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड को भी कहते हैं । सो इन में और इनको लांघ के अर्थात् इन से परे भी वह परमात्मा स्थित है ॥ १ ॥

मू० पुरुष एवेदं᳭सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यं । उतामृतत्वस्येशानः यदन्नेनातिरोहति॥ २ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

टीका यह सब वर्तमान जो है पुरुष ही है अर्थात् और कोई पदार्थ ईश्वर से भिन्न वर्तमान नहीं पूर्ण ज्ञान होने से यह बात निश्चय हो सक्ती है जैसे भ्रम से कोई मनुष्य रस्सी को सर्प समझता है यद्यपि सर्प का अभाव होता है जिस समय मनुष्य रस्सी को जान लेता है तो उसको फिर सर्प नहीं देख पड़ता है अज्ञान के कारण रस्सी सर्प देख पड़ती है सो यह सारा दृश्यमान संसार परमात्मा की लीला के समुद्र की लहरें हैं जो केवल देखने में आती हैं और फिर उसी में लीन हो जाती हैं । कोई भिन्न वस्तु नहीं है जैसे नदी की लहरें बुल्ला इत्यादि, नदी से कोई भिन्न वस्तु नहीं इसी प्रकार से पूर्व कल्पों की रचना वा भविष्यत् कल्पों की रचना सब ही परमात्मा का अंग और रूप है । "अमृतत्व" अर्थात् मोक्ष का भी वह पुरुष स्वामी है सो वह पुरुष प्राणियों के कर्म फल भोग कराने को अपनी चैतन्य निराकार अवस्था को छोड़ के जगत् की अवस्था को प्राप्त होता है अर्थात जगत् स्वरूप हो जाता है ॥ २ ॥

मू० एतावानस्य महिमा अतोज्यायाꣳश्चपुरुषः । पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ३ ॥

टीका ऐसे पुरुष की इतनी महिमा अर्थात् उसकी ऐसी बड़ाई है कि सब देश काल में संसार का मोक्ष करता है इसी कारण से उसको ज्यायान् श्रेष्ठ पुरुष पुरुषोत्तम कहते हैं सो उस पुरुष के एक पाद चतुर्थांश अर्थात् किञ्चित् अंश से यह चराचर आत्मक संसार है त्रिपाद स्वर्ग वा आकाश में है और ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद त्रयीमय वह पुरुष सूर्य्य है "त्रिपाद" का दूसरा अर्थ अमृत विनाश रहित परमात्मा है "दिवि" का दूसरा अर्थ है द्योतनात्मक और स्व-

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रकाश रूप में स्थित है और वह त्रिपात मोक्ष का द्वारा है सो मोक्ष के इच्छा करनेवाले इस सूर्य्य मण्डल के पार होके उस परमात्मा में लीन होते हैं सो उस पुरुष परमात्मा में संसार का लेश भी छू नहीं गया है वह केवल सर्वात्मक अर्थात् सब की आत्मा में ही नहीं किन्तु नित्यानन्दता का स्वामी है कदाचित् कोई कहे कि पञ्चात्मक सर्वात्मक तत्वों से युक्त क्यों उसको कहा सो यह तो उसकी अपरम्पार महिमा बड़ाई है वह परमात्मा संसार से युक्त और संसार से भिन्न है यही आशय महिमा शब्द का मूल में है ॥ ३ ॥

मू० त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोस्येहाऽभवात् पुनः । ततो विष्वङ्व्यक्रामत् साशनानशनेअभि ॥ ४ ॥

टीका—पूर्वोक्त लक्षण "त्रिपात" के ऊपर संसार से रहित वह पुरुष उत्कृष्टता से स्थित है उसका एक पाद इस माया में फिर आया (अर्थात् अनेक कल्प के प्रलय से फिर वह पाद जगत् रूप आता है और बारम्बार सृष्टि होती है) । तब माया में आके वह अनेक प्रकार की सृष्टि का करता देव मनुष्य कीड़ा इत्यादि रूप से व्याप्त हुआ और वेद के द्वारा कर्म का भोग और मोक्ष का मार्ग बताते हुये आपही वह विश्वकर्त्ता अनेक प्रकार से प्रकट हुआ ("एकोहं बहुधा स्याम") अर्थात् एक मैं हूं बहुत प्रकार से हो जाऊं । दूसरा अर्थ-साशन, भोजन के व्यवहार में जितने प्राणी हैं और अनशन साशन से रहित पहाड़ और नद्यादिक इन सब को देखते हुये वह पुरुष उनहीं में व्याप्तवान हुआ ॥ ४ ॥

मू० तस्माद्विराडजायत, विराजो अधि पूरुषः । सजातो अत्यरिच्यत, पश्चाद्भूमिमथोपुरः॥५॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

टीका-विविध प्रकार की जिस में वस्तु होती हैं उसकी विराट संज्ञा है जो पूर्व में विराट पुरुष वा ब्रह्मांड देह हुआ वह उसी आदि पुरुष परमात्मा से हुआ वही उत्पत्ति का स्थान पुरुष जीव हुआ उसी के अनेक रूप देव मनुष्य कीड़ा इत्यादि हुये पीछे से भूमि हुई तब जीवों की देह हुई ॥ ५ ॥

मू० यतपुरुषेणहविषा देवायज्ञमतन्वत । वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ ६ ॥

टीका-जिस काल में पूर्वोक्त पुरुष हुआ तो इस आशय से कि आगे सृष्टि चले उसी पुरुष को देवताओं ने यज्ञ की सामग्री कल्पना किया जिसमें यज्ञ साधन किया जावे और परमात्मा अपनी कृपा से यह फल देवें कि सृष्टि चले तो उस समय में कोई बाहर की वस्तु नहीं थी कि उस से सामग्री यज्ञ की बटोरते सो उसी पुरुष विराट को सामग्री माना और मानसी यज्ञ किया और वसन्त ऋतु को घी बनाया और ग्रीष्म ऋतु को लकड़ी शरद ऋतु को हवि और सामग्री की वस्तु बनाई आशय इसका यह है कि उस विराट पुरुष की बहुत ज्ञान पूर्वक भक्ति उपासना की और सृष्टि चलने की प्रार्थना की सो ब्रह्मा जी उसी के नाभि के कमल से उत्पन्न हुए सो उस समय उन को उसी पुरुष के अङ्ग में सब प्रकार की सामग्री देख पड़ती थी ॥ ६ ॥

मू०सप्तास्यासनपरिधयः त्रिःसप्तसमिधःकृताः । देवायद्यज्ञंतन्वानाः अवध्नन्पुरुषं पशुं ॥ ७ ॥

टीका-उस यज्ञ की सात परिधियां वेदी के लपेटने की वस्तु गायत्री आदि सात छन्द और त्रिसप्तः अर्थात् साततिये २१ समिधें यज्ञ की लकड़ियां जैसे पीपल की छोटी लकड़ियां लगाई जाती हैं संख्या इस प्रकार से तर्कना की पांच ऋतु बारह मास तीन लोक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

और लोक उनके अन्तर्गत एक सूर्य्य । देवताओं ने जो यज्ञ मानसी क्रिया सो ध्यान मात्र से उस पुरुष को पशु अर्थात् जो प्रोक्षितवान् है बांधा अर्थात् उसकी मानसी उपासना की ॥ ७ ॥

मू० तं यज्ञं बर्हिषिप्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेनदेवा अयजन्त साध्याऋषयश्चये ॥ ८ ॥

टीका–वह यज्ञ साधन भूत पुरुष आपही यज्ञ की सामग्री का पदार्थ ठहरा उसी को मानसी यज्ञ में प्रोक्षण अभिषेक किया वह ऐसा पुरुष है जो सृष्टि के पहले विराट रूप से उत्पन्न हुआ क्योंकि पांचवीं ऋचा में लिखा है । "उस से विराट" हुआ सो देवताओं ने उसका यज्ञ पूजन किया और साध्यों ने जो सृष्टि साधन के योग्य हैं उन्हों ने और भृगु मरीच दक्षादिक ऋषियों और २ ऋषिमंत्र के देखने वालों ने उसकी उपासना की ॥ ८ ॥

मू० तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यं ।
पशूꣳस्ताꣳश्चक्रे वायव्यान् आरण्यान्
ग्राम्याश्चये ॥ ६ ॥

टीका–वह यज्ञ सबका हूयमान है अर्थात् उसे सब करते हैं वा जिसमें सर्वात्मक पुरुष वर्तमान है सो उस से देवताओं के भोजन के योग्य घृत हुआ और उस पुरुष ने वायुदेवता के पशु और जङ्गल के पशु हिरन आदि और ग्राम के गाय घोड़ा आदि बनाए सो उस पुरुष का एक ही वर्णरस है और अनेक प्रकार की शक्ति सामर्थ उस की है वह सब वस्तु बनाता है और संहार करके अपने में मिला लेता है ॥ ९ ॥

मू० तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

छन्दा ꣳ सिजज्ञिरे तस्मात् यजुस्तस्माद
जायत १० ॥

टीका—उस यज्ञ से जो सब का हूयमान है ऋग्वेद सामवेद उत्पन्न हुये सब गायत्री इत्यादिक छन्द भी उस से उत्पन्न हुए और यजुर्वेद उत्पन्न हुआ ॥ १० ॥

मू० तस्मादश्वाअजायन्त येकेचोभयादतः ।
गावोहजज्ञिरेतस्मात् तस्माज्जाताअजावयः॥११॥

टीका—उस से घोड़े उत्पन्न हुए और 'उभयादतः' जो कोई पशु जिनके ऊपर नीचे दन्त होते हैं गदहा इत्यादि गायें उस से उत्पन्न हुई यह प्रत्यक्ष है उस से अजाः बकरे अवयः भेड़ियां उत्पन्न हुई इस में (ह) का अर्थ प्रत्यक्ष करके और "जज्ञिरे" का उत्पन्न हुए हैं ॥ ११ ॥

मू० यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् ।
मुखंकिमस्यकौबाहू कावूरूपादावुच्येते ॥ १२ ॥

टीका—जब उस पुरुष का ज्ञान कांड से प्रोक्षण हुआ तो कितने प्रकार से उसकी कल्पना हुई इस के मुख से क्या हुआ बाहों से क्या जांघों से क्या पैरों से क्या यह प्रश्न की रीति से ऋचा है आगे उत्तर है ॥ १२ ॥

मू० ब्राह्मणोस्य मुखमासीत् बाहूराजन्यः
कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रो
अजायत ॥ १३ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

टीका-उस पुरुष के मुख से ब्राह्मण हुये बाहों से क्षत्रिय हुये उस की जांघों से वैश्य पैरों से शूद्र उत्पन्न हुये ॥ १३ ॥

मू० चन्द्रमा मनसो जातः चक्षोः सूर्य्यो अजायत । मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुर जायत ॥ १४ ॥

टीका-मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ नेत्रों से सूर्य्य उत्पन्न हुआ मुख से इन्द्र और अग्नि प्राण से वायु उत्पन्न हुई ॥ १४ ॥

मू० नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः सम वर्त्तत । पद्भ्यांभूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन् ॥ १५ ॥

टीका-नाभी से अन्तरिक्ष आकाश मस्तक से द्यौः स्वर्ग हुआ पैरों से भूमि कानों से दिशा पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण उसी प्रकार से सब १४ लोक भूः इत्यादि हुये ॥ १५ ॥

मू० यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचन्ते यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥ १६ ॥

टीका-ब्रह्मादि देवताओं ने मानसी यज्ञ से उस यज्ञ पुरुष का पूजन किया उस पूजन के धर्म तो पहले ही से थे "ते महिमानः" उन महात्माओं ने अर्थात् प्राचीन साधक उपासक और देव लोगों ने "नाकम्" विराट प्राप्ति रूप स्वर्ग अपनी उपासना के द्वारा रचा और उसी में आप रहते हैं । संक्षेप यह है कि उपासक लोग विराट स्वर्ग को आपही अपनी उपासना से रच के उसी में बसते हैं ॥ १६ ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निवेदन ।

यह सूक्त ऋग्वेद का है एक मास तक जो नित्य सोलह पाठ पाठ करे तो माता आदि से भोग करने का पाप छूटता है । श्लो० २५१ अ० ११ मनुः ।

अथ नारायणोपनिषद् ।

नारायण उपनिषद् की एक ऋचा भी जो आगे लिखेंगे उस के पढ़ने का इतना फल है जितना किसी तपस्वी को जंगल में सौ वर्ष तपस्या करने से होता है आगे पांच यज्ञ का व्यौरा लिखते हैं जिस में वेद का पाठ भी एक यज्ञ है । १ देव यज्ञ अग्नि में होम करना २ पितृयज्ञ पित्रों का तर्पण ३ भूतयज्ञ अग्राशन इत्यादिक ४ मनुष्य यज्ञ ब्राह्मणों को यथायोग्य भोजन ५ ब्रह्म यज्ञ यजुर्वेद वा सामवेद की एक ऋचा भी पढ़ना ।

नारा जल है अयन स्थान जिसका वह नारायण शब्द का अर्थ और आशय है अर्थात् जलंशाई परमात्मा । श्लो० १० अ० १ मनुः ।

अथ पुरुषो हवैनारायणोऽकामयतप्रजाः सृजेयेति । नारायणात्प्राणो जायते मनः सर्वेन्द्रियाणि च ॥ खं वायुर्ज्योतिरापश्च पृथिवी विश्वस्यधारिणी । नारायणाद्ब्रह्मा जायते नारायणाद्रुद्रो जायते ॥ नारायणात्प्रजापतिः जायते नारायणादिन्द्रोजायते । नारायणादष्टौ वसवोनारायणादेकादशरुद्राः ॥ नारायणाद्द्वादशादित्याः सर्वादेवताः । सर्वेऋषयः सर्वाणि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

छन्दांसि सर्वाणि च भूतानि ॥ नारायणादेव समुत्पद्यन्ते नारायणे प्रलीयंते ॥ १ ॥

टीका—उस पुरुष ने जो निश्चय नारायण है कामना की कि प्रजा की सृष्टि रची जाय तो श्री नारायण से प्राण उत्पन्न हुआ और मन से इन्द्रियां 'खं' आकश (ज्योति) (अग्नि)(जल) (और पृथिवी जो संसार का आधार है) नारायण से सब ब्रह्मा हिरण्यगर्भ लोक अधिष्ठाता रुद्र प्रजापति १ इन्द्र ८ बसु ११ रुद्र १२ सूर्य सब देवता ऋषि सब छन्द सब भूत होनेवाली वस्तु उत्पन्न होती हैं और उसी नारायण में मिल जाती हैं। यह पहला अध्याय है।

ॐ अथ नित्यो देवएको नारायणो। ब्रह्मा च नारायणः शिवश्च नारायणः॥ शक्रश्चनारायणो वसवोऽश्विनौच नारायणो। द्वादशादित्याश्च नारायणः ॥ सर्वेऋषयश्चनारायणःकालश्च नारायणो। दिशश्चनारायणो अधश्चनारायणः ऊर्ध्वं च नारायणो मूर्तामूर्तं च नारायणः। अन्तर्बहिश्चनारायणो एवेदंसर्वंयद्भूतं यच्चभव्यं ॥ अथ नित्यो निष्कलंको। निराख्यातो निर्विकल्पो निरंजनः शुद्धोदेव एको नारायणो नद्वितीयोस्ति कश्चित् ॥

टीका--वह नित्य देव एक नारायण ही है। ब्रह्मा, शिव, इन्द्र, वसु अश्विनीकुमार, १२ सूर्य्य सब ऋषि भी नारायण ही है और काल

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

दिशा ऊपर नीचे मूर्ति अमूर्ति भीतर बाहर सब नारायण है जो था और होगा। फिर वह नारायण नित्य है विना कलंक है न उसका विकल्प है वह निरंजन है एक वही नारायण शुद्धदेव है दूसरा कोई नहीं है।

व्याख्या—निष्कलः प्राणादि कला से रहित। निराख्यातः जहां कर्म का अभाव है निर्विकल्पः सिद्धि वस्तु से भिन्न अद्वितीय परमात्मा निराख्यातः जिसकी महिमा के वर्णन में कोई इन्द्रिय पहुंच नहीं सकती निरञ्जनः कारण से शून्य शुद्धः नाम रूपक्रिया से रहित। अथ शब्द प्रारम्भ में शुभार्थ और द्योतक है।

य एवं वेद सविष्णुरेवभवति रुद्रं स सारथिं कृत्वा मनः। प्रग्रहवान्पुमान् प्रयातिपरमं पारं विष्णवाख्यं पदमव्ययामिति ॥ एतद्वै नारायणा स्योपनिषदं यो हवैनारायणस्योपनिषदमधीते। ससर्वेभ्यः पापेभ्यो विमुक्तो भवति ॥ ससर्वेभ्यो घोरेभ्योविमुक्तोभवति ससर्वान्कामानवाप्नोति ससर्वान्कामानाप्नोति ससर्वाल्लोकानाप्नोति ब्रह्मत्वंचगत्वा अमृतत्वंचगच्छतीति। ओं मित्ये तदग्रेव्याहरेन्नम इति ॥ पश्चान्नारायणायेत्यु परिष्टात्। ओंमित्येकाक्षरं नम इति द्वेअक्षरे ॥ नारायणायेति पञ्चाक्षराणिएतद्वैनारायणस्या ष्टाक्षरं पदमधीति ॥ अनपवृत्रः सर्वमायुरेति

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विंदते प्राजापत्यं रायस्पोषं गोपत्यं ततोऽमृतत्व मश्नुते ततोमृतत्वमश्नुते ।

टीका--जो यह जानता है विष्णु ही हो जाता है और **रुद्रं अर्थात्** बुद्धि को सारथी रथ हांकनेवाला बनाके जो पुरुष **मनः अंतःकरण** की ज्ञान शक्ति रास पकड़ता है वो विष्णवाख्य पद को अच्छे प्रकार से जाता है वह पद अव्यय अर्थात् नाश रहित है जो यह निश्चय नारायण उपनिषद् है सो जो नारायण उपनिषद् पढ़ता है वह सब पापों से छूटता है वह सब भयों से छूटता है सब कामना उसकी पूरी होती हैं सब लोकों को जाता है और ब्रह्मत्व को पहुंच के अमृतत्व अर्थात् आनन्द अवस्था को प्राप्त होता है ।

ॐ पहले तब नमः तब **नारायणाय** शब्द मिलाके **ॐ नमो-नारायणाय** आठ अक्षर का पद बना सो इसको जो पढ़ता है वह कीर्तिमान होकर पूरी आयुर्दाय पाता है और प्रजापति होता है अर्थात् सन्तानवाला गृहस्थ होता है स्वर्णादिकों से पुष्टि पाता है गायों का स्वामी होता है और मोक्ष वा बहुत उत्तम ज्ञान पाता है ।

व्याख्या--सो जो मनुष्य ऐसे नारायण को जानता है वह विष्णुही हो जाता है रुद्र अर्थात् आत्मज्ञानी बुद्धि की डोरी बनाके इन्द्रियों के घोड़े शरीर के रथ में लगाले संवत्सर को मार्ग बनावे। पाप पुण्य को पहिया बनावे, सत्व रज तम के पताका बनावे प्राण अपान समान व्यान उदान की रस्सियों से बांधे मन की डोरी रास बुद्धि को हांकनेवाला हृदय को बैठने की जगह औरदुःख सुख की छतुरी बना के सवार होय और मन की डोर पकड़नेवाला बने वह पुरुष विष्णवाख्य पद को अच्छे प्रकार से जाताहै अर्थात् मोक्ष पाता है व्याप न स्वभाव होके कर्म से रहित हो जाता यही विष्णवाख्य पद है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लक्ष्मीसूक्त ।

ऋग्वेद परिशिष्टस्थं लिख्यते तदर्थश्च ।

उँ हिरण्यवर्णांहरिणींसुवर्ण रजतस्रजाम् ।
चन्द्रांहिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम*आवह १ ॥

टीका--सोने कासा वर्ण हरणी कासा चंचल स्वभाव सुवर्ण चांदी की माला पहिने चन्द्रमा के तुल्य आनन्द देनेवाली श्रीलक्ष्मी जी हिरणमयी हैं । उसको हे जातवेद अग्नि तुम हमारे पास लाओ ।

व्याख्या--देवताओं को अग्नि के द्वारा आहुति पहुँचती है । इसी हेतु से यह प्रार्थना अग्नि से की जाती है और जातवेद ईश्वर का भी नाम है ॥ १ ॥

ताम्मआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगा¶मिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयङ्गामश्वम्पुरुषानहम् ॥ २ ॥

टीका--उस लक्ष्मी को हे जातवेद अग्नि हमारे लिये तुम लाओ जो शीघ्र ही चली न जावे उसकी सब वस्तु सोना गऊ घोड़ा पुरुष अर्थात् सन्तान हमको प्राप्त होवे ॥ २ ॥

अश्वपूर्व्वां†रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् ।

---

* 'मम' आवह' अप पाठ है और षष्ठी है अर्थ ठीक नहीं होता यहां चतुर्थी 'मे' के स्थान 'म' अर्थ मुझे वा मेरे लिये । 'मम' का अर्थ मेरा है ।

¶ 'अलप' अप पाठ है ।

† पूर्णां अप पाठ है । आगे अश्व का क्रम है मध्य में रथ लिखा है । 'प्रमोदनीं' अप पाठ है । देवीर्जुषताम् में रेफ अप पाठ है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रियन्देवीमुपह्वये श्रीर्म्मादेवी जुषताम् ॥ ३ ॥

टीका--आगे घोड़ा मध्य में रथ और मतवाले गजों की नाद अर्थात् शब्द से जानी जाती है ऐसी श्रीदेवी को मैं आवाहन करता हूं सो वह मेरी सेवा पालना करे ॥ ३ ॥

कांसोस्मितांहिरण्यप्राकारामार्द्रांज्वलन्तींतृप्ता न्तर्प्पयन्तीम् । पद्मेस्थितामपद्मवर्णान्तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥

टीका--मुझे उसकी इच्छा है अथवा वह लक्ष्मी ब्रह्म स्वरूप है और मुस्कराती है सुवर्ण की चारादिवारी और भक्तों की दयालु है और सूरज के समान प्रकाश करनेवाली है आप तृप्त है औरों को तृप्त करनेवाली है कमल के फूल में बैठी है और कमल का सा वर्ण है उस को मैं यहां अपने घर में बुलाता हूँ ॥ ४ ॥

चन्द्राम्प्रभासां यशसाज्वलन्तीं श्रियंल्लोके देवजुष्टामुदाराम् । ताम्पद्मि‡नेमिंशरणमहम्प्र पद्येऽलक्ष्मीर्मेनश्यतांत्वां वृणे ॥ ५ ॥

टीका--चन्द्रमा के तुल्य उस के यश की प्रभा अर्थात् कांति है और सूर्य के समान चमकनेवाली है उस लक्ष्मी का देवता पूजन करते हैं उस लक्ष्मी के शरण मैं इस लोक में जाता हूँ वह मेरी दरिद्रता को नाश करे हे लक्ष्मी मैं तुम से यह प्रार्थना करता हूँ ॥ ५ ॥

---

‡'पद्मिनेमिं' अप पाठ है । वृणोमि अप पाठ है क्योंकि ११ अक्षर का त्रिष्टुप् छन्द में पाद होता है वृणोमि से एक अक्षर छन्द में बढ़ता है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आदित्यवर्णो तपसोधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथबिल्वः । तस्यफलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्याअलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

टीका--हे आदित्य वर्ण लक्ष्मी जो तुम्हारा सम्बन्धी बेल का वृक्ष है । जिसने तप करके ऐसी पदवी पाई कि वन के वृक्षों का राजा हुआ । उस के फल हवन में भस्म होने के द्वारा हमारे बाहर भीतर की दरिद्रता या दरिद्र की रेखा ललाट की दूर करे ॥ ६ ॥

उपैतुमांदेवसखः कीर्तिश्चमणिनासह । प्रादुर्भूतोस्मिराष्ट्रेऽस्मिंकीर्तिमृ*द्धिंददातुमे ॥ ७ ॥

टीका--हे महादेव के मित्र कुबेर वा नारायण तुम कीर्ति और चिन्तामणि सहित हमारे निकट आवो जिस देश में मैं रहूं वहां मुझे कीर्ति और धन देओ ॥ ७ ॥

क्षुत्पिपासामलाञ्ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्† । अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्व्वान्निर्णुदमेगृहात् ॥ ८ ॥

टीका-- भूख प्यास मल दरिद्रता और निर्धनता को मैं नाश करता हूँ । दरिद्रता और पूर्ण धन के अभाव सब को मेरे घर से दूर करो ॥ ८ ॥

गन्धद्वारादुराधर्षां नित्यपुष्टांकरीषिणीम् । ईश्वरींसर्व्वभूतानांतामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ ९ ॥

---

* 'वृद्धिं' आप पाठ है इसका अर्थ बढ़ती सन्तानादि की है पाठ में वृद्धि वे सम्बन्ध है । और 'ऋद्धि' धन और कोश को कहते हैं इस का सम्बन्ध बहुत प्रकट है ।

† एक वचनान्त पाठ यहां पर बहुधा करते हैं वह ठीक नहीं ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

टीका--सुगन्ध जिसका द्वारा अर्थात् लक्षण है । और जहां दुःख की पहुँच नहीं है अर्थात् दुःख वहां आक्रमान नहीं कर सक्ता है । ऐसी जगह वह श्री लक्ष्मी जी की है और वह सदा पुष्ट रखती है वा गोमय में बसती है सारे भूतों अर्थात् सब प्राणी वा पदार्थों में वह ईश्वरी है उस लक्ष्मी को मैं आवाहन करता हूँ ॥ ९ ॥

मनसःकाम माकूतिंवाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनांरूपमन्नस्यमयि श्रीःश्रयतांयशः ॥१०॥

टीका--मन की इच्छा अर्थात् जो मन में संकल्प हो वह प्राप्त हो जाय सो ऐसी इच्छा हमारी सिद्ध होवे, पशु और अन्न प्राप्त होने की शोभा हमको होय वा सुन्दर अन्न और पशु हमको मिले ।१०।

कर्दमेन प्रजाभूतामयिसंभव * कर्दम ।
श्रियंवासय मेकुले मातरम्पद्म मालिनीम् ११॥

टीका--कर्दम नाम प्रजापति ने प्रजा उत्पन्न की । हे कर्दम तुम मुझपर कृपा करो श्री लक्ष्मी को मेरे कुल में बसाओ वह माता कमल की माला धारण किये है ॥ ११ ॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीतवसमेगृहे ।
निचदेवीं मातरं श्रियंवासयमेकुले ॥ १२ ॥

टीका-जल हमारे घर में मनोहर वस्तु उत्पन्न करे । हे चिक्लीत ऋषी के पुत्र तुम मेरे घरमें बसो । और भी श्री लक्ष्मी देवी को मेरे कुल में बसाओ ॥ १२ ॥

आर्द्रांपुष्करिणीम्पुष्टिम्पिङ्गलां पद्ममा

---

* सम्भ्रम अप पाठ है ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

लिनीम् । चन्द्रां+ हिरण्मयीं लक्ष्मी
जात वेदोमआवह ॥ १३ ॥

टीका--दया शील कमल हाथ में लिये पुष्टि देने वाली पीतवर्ण कमल की माला पहिने है चन्द्रमा की सी कांति है और हिरण्मयी है। ऐसी लक्ष्मी को हे जातवेद अग्नि तुम मेरे पास लाओ ॥ १३ ॥

आर्द्रांयष्करिणीं यष्टिसुवर्णां हेममा
लिनीम् । सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मी
जातवेदोमआवह ॥ १४ ॥

टीका--दया स्वभाव उस लक्ष्मी का है। और वह दण्ड धारण किये हुये शिक्षा करती है और सहायता करने वाली है और सोने कासा स्वरूप उसका है और सोने की माला धारण किये है सूर्य के तुल्य उसकी कांति है और हिरण्मयी है सो हे जातवेद अग्नि ऐसी लक्ष्मी को मेरे निकट लाओ ॥ १४ ॥

ताम्मआवह जातवेदो लक्ष्मी मन
पगामिनीम । यस्यां हिरण्यम्प्रभूतंगा
वोदास्योऽश्वान्विन्देयम्पुरुषानहम् १५

टीका--हे जातवेद मैं उस लक्ष्मी जी को बुलाता हूं जो शीघ्र ही चली न जावे और उसके सारे पदार्थ अर्थात् बहुत सा सुवर्ण गऊ और दासियां और घोड़े और पुरुष अर्थात् टहलुवे इत्यादि मुझे प्राप्त होवें ॥ १५ ॥

+ चन्द्रमा मनसो जातः० ऋचा से प्रकट है कि पहले चन्द्रमा पीछे सूर्य उत्पन्न हुये सो १३ और १४ ऋचा में यही क्रम प्राचीन है और दूसरे प्रकार से अप पाठ होता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य
मन्वहम् । श्रियः पञ्चदशर्चञ्च श्री
कामस्सततञ्जपेत् ॥ १६ ॥

टीका--जो मनुष्य शुद्ध होके श्रद्धा सहित नित्य घृत से यह पन्द्रह ऋचा पढ़के हवन करे और नित्य पाठ किया करे उस को पूर्वोक्त लक्ष्मी प्राप्त होगी ॥ १६ ॥

निवेदन ।

श्री मम्मटभट के भाष्य से इस सूक्त में अप पाठ शोधन हुआ है।

——:०:——

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ॐ श्रीगणेशायनमः ।

चतुर्थ काण्ड ।

पहिले टीका सहित सन्ध्या लिख आये परन्तु सुलभता के हेतु यहां मुख्य सूक्ष्म अंग सन्ध्या के नित्यकर्म के हेतु लिखेंगे ।

स्नानादि करके कुश वा और पुनीत आसन पर बैठ तब एकान्त में क्रम से यह कर्म करे । १ तीन बार गायत्री पढ़के शिखा बांधे । २ तब गायत्री मन्त्र से देह के चारों ओर जल छिड़के यज्ञोपवीत को देखले कि टूटा न हो । ३ प्रणव पढ़के तीन आचमन सुन्दर शीतल जल से करे । ४ प्राणायाम । ५ संकल्प देशकाल सहित ।

अमुक गोत्रोऽहममुकशर्म्माहं श्रीपरमेश्वर प्रीतिद्वारा उपात्त दुरितोपशान्ति पूर्वक ब्रह्मावाप्त्यै प्रातर्मध्याह्न सायं सन्ध्योपासनं करिष्ये वा उपासिष्ये ।

ध्यान गायत्री का ।

ॐ ओजोऽसि सहोऽसि बलमसि भ्राजोऽसि देवानाम् धामनामासि विश्वमसि विश्वायुः सर्वमसि सर्वायुरभिभूः ॐ गायत्रीं आवाह यामि ॥

प्राणायाम ।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गो देव

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ॥ ओं आपो ज्योतिरसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥

प्रथम तीन महा व्याहृति वा सात व्याहृति से प्राणायाम **सूक्ष्म** की एक रीति है ।

प्रातःकाल का आचमन ।

ओं सूर्यश्चमा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्यु कृतेभ्यः । पापेभ्यो रक्षन्तां । यद्रात्र्या पापम कार्षं । मनसा वाचा हस्ताभ्यां । पद्भ्यामुद रेण शिश्ना । रात्रिस्तदवलुम्पतु । यत्किंचिद्दुरि तं मयि । इदमहंमाममृतयोनौ । सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा । ओं ॥

सायंकाल का आचमन ।

अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृ तेभ्यः । पापेभ्यो रक्षन्तां । यदह्ना पापमकार्षं । मनसा वाचा हस्ताभ्यां । पद्भ्यामुदरेण शिश्ना । अहस्तदवलुम्पतु । यत्किञ्चदुरितंमयि । इदमहं माममृतयोनौ । सत्ये ज्योतिषि जुहो मि स्वाहा ॥

मध्याह्न का आचमन ।

आपः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातुमाम् ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पुनन्तु ब्रह्मणस्पतिर्ब्रह्म पूता पुनातुमां । यदु
च्छिष्टमभोज्यं वा यद्वा दुश्चरितं मम । सर्वं
पुनन्तु मामापोऽसताञ्च प्रतिग्रहᳫं स्वाहा ॥

मार्जन ।

आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन ।
महेरणाय चक्षसे । योवः शिवतमो रसस्तस्य
भाजयतेह नः । उशतीरिव मातरः । तस्मा अ
रंग मामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जन
यथाचनः ॥

अघमर्षण ।

ऋतंच सत्यं चाभीद्धात्तपसोध्यजायत । ततो
रात्रिरजायत ततः समुद्रोऽर्णवः । समुद्रादर्ण
वादधिसंवत्सरो अजायत । अहोरात्राणि विद
धद्विश्वस्य मिषतोवशी । सूर्य्याचन्द्रमसौ धा
ता यथा पूर्वमकल्पयत् । दिवञ्च पृथिवीं चा
न्तरिक्षमथो सुवः ॥ (वा) स्वः ॥

मार्जन ।

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ
तपः ॐ सत्यं ॥

आचमन ।

अन्तश्चरसिभूतेषु । गुहायां विश्वतोमुखः ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

त्वंयज्ञस्त्वं वषट्कार आपोज्योतिरसोमृतं ।
ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों ॥

सूर्य्याञ्जलि ।

प्रातःकाल और सायंकाल में तीन तीन अंजुली सूर्य्य को देवे और मध्याह्न में एक अंजुली । अंजुली इस प्रकार से होगी दोनों हाथ से चिल्लू बना के पानी किसी तसले से भर लेवे और दोनों अंगूठे अंजुली के भीतर झुके रहें तब जल आकाश की ओर उछाल देवे ।

उपस्थान ।

ओं उद्वयंतमसस्परि। ज्योतिष्पश्यंत । उत्तरं। देवं देवत्रा । सूर्यमगन्मज्ज्योतिरुत्तमम् । १ ओं उदुत्यञ्जातवेद सन्देवंवहन्तिकेतवः । दृशेविश्वायसूर्यम् । २ ओं चित्रन्देवानामुद गादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्यवरुणस्याग्नेः । आप्रा- द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्यआत्मा जगतस्त स्थुषश्च । ३ ओं तच्चक्षुर्देवहितम्पुरस्ताच्छु क्रमुच्चरत्पश्येम शरदः शतम् जीवेम शरदः शतम् शृणुयाम शरदः शतम् प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् । ४ ओं हंसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षस द्धोतावेदिषद् तिथिर्दुरोणसत् नृषद्वरसद

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ऋतसद्योमसदब्जागो जाऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ ५ ॥

मध्याह्न का उपस्थान।

ॐ अथय एतस्मिन्मण्डले पुरुषोयश्चैष हिरण्मयः पुरुषोय एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषोयमेवसोयं दक्षिणाद्न्पुरुषश्च शुक्रियं रुद्रस्य । १ । ॐ य उदगात्पुरस्तात्महतोऽर्णवाद्विभ्राजमानः सरिरस्य मध्ये समा वृषभो रोहिताक्षः सूर्योविपश्चिन्मनसा पुनातु यद्ब्रह्मवादिष्मतन्मा माहिंसीत्सूर्याय विभ्राजाय वै नमो नमः ॥ २ ॥

न्यास।

ॐ अनाभौ उहृदयेमाशिरसि ॐ भूः पादयोः ॐ भुवः जान्वोः ॐ स्वः गुह्ये ॐ महः नाभौ ॐ जनः कण्ठे ॐ तपः ललाटे ॐ सत्यं शिरसि ॐ भूः हृदयाय नमः ॐ भुवःशिरसे स्वाहा ॐ स्वः शिखायै वषट् ॐ महः कवचायहुं ॐ जनःनेत्राभ्यां वषट् ॐ तपः सत्यमस्त्रायफट् ॐ भूः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॐ भुवः तर्ज्जनीभ्यां नमः ॐ स्वः

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मध्यमाभ्यां नमः उँ महः अनामिकाभ्यां नमः उँ जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः उँ तपः सत्यं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ।

इस के पीछे प्राणायाम करे तब ओ जोसि ऋचा से गायत्री का ध्यान करे ।

जप गायत्री का ।

उँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् उँ ।

१० वा १०० वा १००० बार गायत्री का जप करे ।

जप निवेदन ।

उँ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित मन सस्यत इदं देवयज्ञं स्वाहा वाचे स्वाहा वा ते धाः ॥

यह मन्त्र पढ़ते में देवतीर्थ से तर्पण करे ।

नमस्कार देवतों को ।

नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम औषधीभ्यः नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे वृहते करोमि । उँ शान्तिः ॥ ३ ॥

गायत्री का विसर्जन ।

उत्तमे शिखरे देवी भूम्यां पर्वत मूर्द्धनि । ब्राह्मणेभ्योऽभ्यनुज्ञाता गच्छ देवि यथासुखं ॥

उँ शांतिः ॥

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पंचम काण्ड ।

अब स्नानादि सूक्ष्म विधि लिखते हैं.

स्नान के मन्त्र ।

ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्रमूर्त्तये सहस्रपादाक्षि शिरोरुबाहवे। सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रकोटी युगधारिणे नमः ॥

इस श्लोक को पढ़ते हुए बांया पैर धोवे ।

ॐ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते ॥

इस श्लोक को पढ़ते हुए दहना पैर धोवे ।

ॐ गंगाप्रयागगयनैमिषपुष्कराणि तीर्थाणि यानि भुवि सन्निहरिप्रसादात्। आयान्तु तानि करपद्मपुटे मदीये प्रक्षालयन्तु वदनस्य निशाकलंकम् ॥

इस श्लोक को पढ़ते हुए मुँह धोवे ।

ॐ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुसाक्षान्महेश्वरः। गुरुरेवजगत् सर्वं तस्मै श्रीगुरुवेनमः ॥

इस श्लोक को पढ़ते हुए चोटी धोवे ।

ॐ यज्ञोपवीतं परमंपवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पुरस्तात्। आयुष्य मग्न्यंप्राति मुञ्चशुभ्रं यज्ञो पवीतं बलमस्तु तेजः ॥

इस श्लोक को पढ़ते हुए यज्ञोपवीत धोवे। और यह ही मन्त्र नवीन यज्ञोपवीत पहिनने का भी है।

पवित्र स्थान में पवित्र होकर सूत को मिली हुई चारों उंगलियों की जड़ पर छियानबे बार गिनकर लपेटे तब उसको तेहरा करे और वारुण मन्त्रों से जल से धोवे फिर उस त्रिवलित सूत्र को वामावर्त ऊंचे को बटे फिर उसे गायत्री मन्त्र से त्रिवलित करे तब दक्षिणावर्त बटे तब वह बराबर नव सूत्र का डोरा होजयगा। फिर उसे तीनबार लपेटकर दृढ़ बांधकर ब्रह्मा और विष्णु और शिव इन सब को नमस्कार करे। जो छियानबे बार की संख्या है वह जनेऊ पहिनने वाले के चव्वे की संख्या जानना इस रीति से बालकों का जनेऊ काटि से नीचा और लम्बा न होगा जो और ब्राह्मणों के चव्वे के प्रमाण सें जनेऊ बनेगा तो वह बहुत लम्बा बालकों के पहिनने योग्य न होगा।

२ पहिले कच्चे सूत को तेहरा करके ऊपर को बटे फिर तेहरा करके नीचे को बटे फिर उसे त्रिवृत घुमायके ऊपर एक गांठ दे।

३ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रमित्यादि मंत्र पढ़कर शिर पर से पहिरे।

४ यज्ञोपवीत जो नाभि से ऊंचा होय तो आयुर्दा कमती हो और जो नाभि से नीचा लटकता रहे तो तप को नाश करे इस से विचारमान पुरुष अपनी नाभि तक लम्बा यज्ञोपवीत बटकर बनावे।

५ दश बार गायत्री मन्त्र पढ़कर जल से अभिषिक्त करके शिर से पहिरे और टूट गये को वा नीचे नाभि से गिर गए हुए यज्ञोपवीत को वा भोजन करके बनाए हुए को त्याग करदे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

६ जो एक वस्त्र अर्थात् धोती ही अकेली पहिरे हो तो यज्ञोपवीत को केवल कण्ठ लग्न करके दहिने कान में लपेट ले और जो दो वस्त्र अर्थात् धोती पहिरे हो और अङ्गोछा शिर में लिपटा हो तो सव्य रहकर यज्ञोपवीत कान पर रखकर मूत्र पुरीषादि करे मौन और सावधान होकर ।

भस्म धारण का मंत्र ।

यमदग्नेः त्र्यायुषं कश्यपस्य त्र्यायुषं । यद्देवानां त्र्यायुषं तन्मे अस्तु त्र्यायुषं ॥

व्याख्या--इस मन्त्र में यह प्रार्थना है कि यमदग्नि कश्यप और देवताओं की सी आयु हमारी होवे । भस्म धारण करने की यह युक्ति है त्रिपुण्ड अर्थात् तीनरेखा ललाट में बनावे पहले मध्यमा और अनामिका से बाईं अलङ्ग से दहनी अलङ्ग एक भौं की नोक से लेकर दूसरी भौं की नोक के सामने तक दो रेखा खींचे तब इन दोनों रेखों के बीच में अंगुष्ठ से रेखा खींचे और स्थान ३२ हैं जहां २ भस्म लगाना चाहिये । १ शिर । २ ललाट । ३ । ४ कान । ५ । ६ आंखें । ७ नाक । ८ मुँह । ९ गला १० । ११ दोनों बाहें । १२ पेट । १३ १४ । दोनों हाथ । १५ छाती १६ । १७ दोनों पांजर । १८ नाभि १९ मस्तक । २० त्रिबली अर्थात् पेड्रू के तीन बल । २१ । २२ दोनों जांघें । २३ । २४ दोनों पैर । २५ पीठ । २६ । २७ दोनों कन्ध । २८ । २९ दोनों भुजा । ३० घींच । ३१ । ३२ दोनों नथने ।

ब्राह्मण वेद मन्त्र से लगावे और लोग केवल नमः शिवाय नाम से लगावें ब्राह्मण यज्ञ की भस्म लगावे और लोग जली हुई वस्तु से जिसमें गोमूत्र मिला हो लगावें । पानी मिलाकर लगाना चाहिये ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बिना भस्म उपासना निष्फल होती है इसका महात्म नौवें खण्ड पंचम अध्याय शिवपुराण में है।

सब वर्णों को भस्म धारण का अधिकार है शिव और शिवराणी का ध्यान करके लगाना चाहिये मध्याह्न तक पानी मिलाकर लगावे मध्याह्न के पीछे सूखी लगावे। संन्यासी तो सदा सूखी लगावे हवन की भस्म भी लगाने के योग्य है।

दूसरा पाठ भस्म धारण का मन्त्र।

त्र्ययुषंजमदग्नेः कश्यपस्यत्र्ययुषं। यद्देवेषुत्र्या युषंतन्नोअस्तुत्र्यायुषम्।

शापोद्धार।

गायत्री में जो शाप लगा है उसके छूटने का मन्त्र।

१ ॐ अथ ब्रह्मशाप विमोचनमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः कामदुघा गायत्री छन्दः भुक्तिमुक्ति प्रदा ब्रह्मणानुगृहीता गायत्रीशक्तिर्देवता ब्रह्मशाप विमोचनार्थे जपे विनियोगः। गायत्री ब्रह्मणेत्युपासीद्यद्रूपं ब्रह्मदोविदुस्तां पश्यन्ति धीराः सुमनसावाचमग्रतः ॐ भगवति त्वं ब्रह्मशापाद्विमुक्ता भव॥ १॥

२ अथ विश्वामित्रशाप विमोचन मन्त्रस्य तनूसृष्टिकर्त्ता विश्वामित्र ऋषिः वाग्दोग्धा गायत्रीछन्दः विश्वामित्रानुगृहीता गायत्री शक्तिर्देवता विश्वामित्रशाप विमोचनार्थे जपे

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विनियोगः । उों गायत्रीं भजाम्यग्नि मुखीं विश्वगर्भायदुद्भवा देवाश्चक्रिरे विश्वसृष्टयन्तीं कल्याणीमिष्टकरां प्रपद्ये । यन्मुखान्निस्सृतो खिलदेवगर्भः गायत्री त्वंविश्वामित्रशापाद्वि मुक्ता भव ॥ २ ॥

३ अथ वशिष्ठशाप विमोचन मन्त्रस्य निग्रहा नुग्रहकर्त्ता वशिष्ठऋषिः विश्वोद्भवा गायत्री छन्दः वशिष्ठानुग्रहीता शक्तिर्देवता वशिष्ठशा पविमोचनार्थे जपे विनियोगः । सोहमर्कमहं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवःआत्मज्योतिरहंशुक्रः सर्वज्योतिरसोम्यहम् ॥ अहोदेवि महादेवि दिव्ये सन्ध्ये सरस्वति । अजरे अमरे चैव ब्रह्म योनि नमोस्तुते ॥ इत्युक्त्वायोनिमुद्रां प्रदर्श्य देवी गायत्री वशिष्ठशापात्त्वं विमुक्ता भव ॥ ३ ॥

इन तीनों शापों में गायत्री की स्तुति है और उस को यह आशर्विाद है कि शाप से छूटे । योनिमुद्रा इस ध्यान में बनाना चाहिये ।

इति

पण्डित उपेन्द्र नारायण मुक्कू काश्मीरी सारस्वत लखनऊ वासी पण्डित लक्ष्मीनारायण के पुत्र पण्डित मनसाराम के पोते ।

मुन्सिफ क़ैसरगंज ज़िला बहरायच.

११ गुरुबार फाल्गुण शुक्ल संबत् १९३७

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri